वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक
अप्रैल 01-15, 2025

हिन्दू विश्व

भारत में अत्याचारियों के प्रतीकों का स्थान नहीं

गुना (मध्य प्रदेश) में मध्य भारत की प्रांत बैठक में प्रांत के
पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं के साथ उपस्थित विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी परांडे

गुजरात के पंचमहल जिले में समरसता गोष्ठी को संबोधित करते
विहिप केन्द्रीय मंत्री व अ.भा. समरसता प्रमुख श्री देवजी भाई रावत

न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद, तियाकी अर्ली लर्निंग सेंटर
(ईएलसी) के सहयोग से रंगों के त्योहार होलीकोत्सव का
आयोजन किया गया

कुंभकोणम, तमिलनाडु में पूज्य संतों के सम्मेलन 'महामकम' को
संबोधित करते विहिप के संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी परांडे तथा सम्मेलन में उपस्थित पूज्य संत

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

01–15 अप्रैल, 2025
चैत्र शुक्ल - बैशाख कृष्ण पक्ष
पिंगल संवत्सर
वि. सं. - 2082, युगाब्द- 5127

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा, धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार, रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली–110022–05
दूरभाष : 09582555152

011–26178992, 011–26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए वार्षिक डाक व्यय सहित	$ 75 USD
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

गर्गर स्वर (रणवाद्यों अथवा मेघों से) उभर रहे हैं। गोधा (हस्तरक्षक आवरण अथवा किरणों के धारणकर्ता–अवरोधक) सब ओर शब्द कर रहे हैं। पिंगा (धनुष की प्रत्यंचा अथवा विद्युत) की ध्वनि (टंकार अथवा कड़क) सब ओर सुनाई देती है। ऐसे में इन्द्रदेव (पराक्रमी संरक्षक अथवा वर्षा के देवता) के लिए स्तोत्र बोलें।

– अथर्ववेद

क्रूर एवं आक्रांत मुगल शासक हमरे आदर्श कैसे?	07
फिल्म छावा, औरंगजेब की कब्र और नागपुर हिंसा	09
जाति यानि क्या?	11
भारत की जीत के विजय यात्रा पर बरसे पत्थर और बम	13
सनातन सँस्कृति में छिपा है पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान	15
नागरिक का कर्तव्य	17
सरकारी संपत्तियों पर अतिक्रमण कर बनाई गई मजारों को ध्वस्त करने के सरकारी अभियान के समर्थन में विश्व हिन्दू परिषद	18
अबीर और गुलाल : हिंदू परंपराओं में उनका महत्व	19
बिस्तर पर लेटते ही झट से आ जाएगी नींद	21
मेले भी नहीं होंगे	22
मांसयुक्त रोजा इफ्तारी के सरेआम आयोजन के विरुद्ध बजरंग दल	23
समरसता गोष्ठी एवं बैठक	24
मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्ति का अभियान	25
दुर्गावाहिनी–मातृशक्ति द्वारा विशाल मान वंदन यात्रा	26

सुभाषित

'अब्रुवन् कस्यचिन्निन्दामात्मपूजामवर्णयन्।'
'विपश्चिद् गुणसम्पन्नः प्राप्नोत्येव महद् यशः।।'

'जो किसी की निन्दा नहीं करता और अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए बढ़ा–चढ़ा कर स्वयं की प्रशंसा नहीं करता, ऐसा वह उत्तम गुण सम्पन्न विद्वान् व्यक्ति ही महान् यश/पद को प्राप्त करता है।'

भारत में अत्याचारियों के प्रतीकों का स्थान नहीं

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

भारत एक ऐसा देश है, जिसकी आत्मा उसकी संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों में बसती है। हजारों वर्षों से यह भूमि वेदों, उपनिषदों, मंदिरों और गुरुकुलों की संरक्षक रही है। भारत की यह सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर न केवल इसे विशिष्ट बनाती है, बल्कि इसकी पहचान भी निर्धारित करती है। परंतु इतिहास के पन्नों को पलटकर देखें, तो हमें ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं, जब विदेशी आक्रांताओं ने इस गौरवशाली परंपरा को नष्ट करने के प्रयास किए।

मुगल शासन के समय विशेष रूप से औरंगज़ेब का दौर, भारत के लिए सबसे कठिन समयों में से एक रहा। यह वह समय था जब न केवल मंदिरों को ध्वस्त किया गया, बल्कि गुरुकुलों, संस्कृत विद्यालयों और सनातन परंपराओं को भी समाप्त करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया गया। जो मुगल शासक खुद को 'भारत का बादशाह' कहते थे, उन्होंने भारत की आत्मा को कुचलने का हर संभव प्रयास किया।

बाबर से लेकर औरंगज़ेब तक, कई मुग़ल शासकों ने भारत को केवल एक लूटने योग्य भूमि के रूप में देखा। बाबर ने जहाँ पानीपत की लड़ाई जीतने के बाद अपनी विजयगाथा में इस भूमि को 'काफिरों की भूमि' कहकर वर्णित किया, वहीं हुमायूं और अकबर जैसे शासकों ने भी सत्ता को मजबूत करने के लिए भारत की मूल संस्कृति को कमजोर करने का कार्य किया।

काशी विश्वनाथ मंदिर, मथुरा का केशवदेव मंदिर और सोमनाथ मंदिर सहित सैकड़ों मंदिरों को ध्वस्त किया गया। कई स्थानों पर मंदिरों के अवशेषों पर मस्जिदों का निर्माण कराया गया।

भारतीय शिक्षा प्रणाली, जो वेदों और उपनिषदों पर आधारित थी, को समाप्त करने के प्रयास किए गए। संस्कृत विद्यालयों और गुरुकुलों को बंद करवाया गया, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा बाधित हुई। धार्मिक और साँस्कृतिक उत्पीड़न, जज़िया कर लगाया गया, जो गैर–मुस्लिमों से लिया जाने वाला कर था। हिंदुओं को बलात् धर्म परिवर्तन के लिए विवश किया गया।

औरंगज़ेब ने सत्ता की लालसा में अपने ही परिवार का संहार कर दिया। उसने अपने भाई दारा शिकोह की हत्या की, बहन को कैद में डाला और अपने पिता शाहजहाँ को बंदी बना लिया।

इन अत्याचारों का प्रभाव भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा पड़ा। गुरुकुलों और शिक्षा संस्थानों के नष्ट होने से भारतीय ज्ञान–विज्ञान और परंपराओं का ह्रास हुआ। मंदिरों के टूटने से न केवल आस्था को ठेस पहुँची, बल्कि कला और स्थापत्य की महान धरोहरें भी समाप्त हो गईं।

मुगलों की नीति केवल लूटपाट और दमन तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने मनोवैज्ञानिक रूप से भी भारतीयों को गुलाम बनाने का प्रयास किया। धार्मिक असहिष्णुता के माध्यम से हिंदू समाज को अपमानित करने और सनातन सँस्कृति को कमजोर करने की साजिशें रची गईं।

भारत में आज भी कई ऐसे स्थान हैं, जहाँ औरंगज़ेब और अन्य मुग़ल आक्रांताओं के नामों के प्रतीक मिलते हैं। यह विचारणीय है कि क्या ऐसे अत्याचारियों को सम्मान दिया जाना चाहिए, जिन्होंने भारत की आत्मा पर घातक प्रहार किया? जब भारत में रावण को, जिसने केवल एक स्त्री का अपहरण किया था, हर साल जलाया जाता है, तो औरंगज़ेब और अन्य विदेशी आक्रांताओं के नाम और प्रतीक क्यों बने रहने चाहिए? रावण के अंत के साथ अधर्म पर धर्म की विजय का संदेश दिया जाता है, तो फिर उन मुग़ल शासकों, जिन्होंने लाखों लोगों को उत्पीड़ित किया, के नाम क्यों संजोए जाएँ?

भारत को अपनी संस्कृति, इतिहास और धरोहर को पुनर्जीवित करना होगा। इसके लिए कुछ आवश्यक कदम उठाने होंगे। हमें अपनी शिक्षा प्रणाली में वास्तविक इतिहास को शामिल करना होगा, जिसमें मुगलों द्वारा किए गए अत्याचारों का सही चित्रण करना आज की आवश्यकता है।

जिन स्थानों, सड़कों या संस्थानों के नाम ऐसे आक्रांताओं के नाम पर हैं, उन्हें बदलकर भारत के असली नायकों के नाम पर रखना चाहिए। नष्ट किए गए मंदिरों और सांस्कृतिक स्थलों को पुनः स्थापित किया जाना चाहिए। संस्कृत और भारतीय शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करना चाहिए। आधुनिक भारत को सांस्कृतिक गौरव से जोड़ना, हमें गर्व करना चाहिए कि हम उस संस्कृति के वंशज हैं, जिसने वेद, योग, आयुर्वेद, खगोलशास्त्र और शून्य जैसी खोजें कीं।

भारत की आत्मा को कुचलने वाले विदेशी आक्रांताओं के प्रतीकों को हटाना केवल एक ऐतिहासिक सुधार नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनरुत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हमें यह समझना होगा कि मुग़ल आक्रांताओं का शासन भारत के गौरवशाली इतिहास का हिस्सा नहीं, बल्कि एक दुखद अध्याय था। आज जब भारत आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की ओर बढ़ रहा है, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे महान राष्ट्र की पहचान किसी आक्रांता के नाम से नहीं, बल्कि उसके असली नायकों के नाम से हो।

अब समय आ गया है कि हम भारत को उसकी वास्तविक आत्मा से जोड़ें और यह सुनिश्चित करें कि हमारे देश में केवल उन महापुरुषों के प्रतीक रहें, जिन्होंने इस भूमि को समृद्ध किया, न कि उन आक्रांताओं के जिन्होंने इसे तोड़ने का प्रयास किया।

भारत में आज भी कई ऐसे स्थान हैं, जहाँ औरंगज़ेब और अन्य मुग़ल आक्रांताओं के नामों के प्रतीक मिलते हैं। यह विचारणीय है कि क्या ऐसे अत्याचारियों को सम्मान दिया जाना चाहिए, जिन्होंने भारत की आत्मा पर घातक प्रहार किया? जब भारत में रावण को, जिसने केवल एक स्त्री का अपहरण किया था, हर साल जलाया जाता है, तो औरंगज़ेब और अन्य विदेशी आक्रांताओं के नाम और प्रतीक क्यों बने रहने चाहिए? रावण के अंत के साथ अधर्म पर धर्म की विजय का संदेश दिया जाता है, तो फिर उन मुग़ल शासकों, जिन्होंने लाखों लोगों को उत्पीड़ित किया, के नाम क्यों संजोए जाएँ?

मुस्लिम तुष्टीकरण का विकृत स्वरूप है, औरंगजेब का महिमामंडन

मृत्युंजय दीक्षित

संभा जी महाराज के जीवन पर बनी फिल्म छावा धूम मचाते हुए 500 करोड़ के क्लब में शामिल हो गई है तथा सिनेमा व्यवसाय विशेषज्ञों का अनुमान है कि यह फिल्म अगर 1000 करोड़ का करोबार कर ले तो कोई आश्चर्य नहीं होगा। छावा फिल्म की लोकप्रियता को देखते हुए कुछ राज्यों ने इसे टैक्स फ्री भी कर दिया है। छावा के माध्यम से जनता ने संभा जी महाराज की वीरता और औरंगजेब की क्रूरता को पहली बार अनुभव किया है। जो फिल्म देखने गया उसका ही सिर संभा जी की वीरता के सामने झुक रहा है और औरंगजेब से घृणा हो रही है, साथ ही सच्चे इतिहास को छुपाए जाने और मुगलों को जबरन महिमामंडित किए जाने से क्रोध में भी है।

छावा के माध्यम से वास्तविक इतिहास सामने आ रहा है, तो भारत की राजनीति में कुछ लोग इसे भी अपनी तुष्टीकरण की राजनीति में भुना लेना चाहते हैं और क्रूर औरंगजेब के पक्ष में खड़े होकर अपने वोट बैंक को खुश कर रहे हैं। महाराष्ट्र के सपा विधायक अबू आजमी ने औरंगजेब को महान समाजसेवी बता दिया, जिसके बाद महाराष्ट्र से लेकर उत्तर प्रदेश तक राजनीतिक बयानबाजी गर्म हो उठी। इसके बाद अबू आजमी को महाराष्ट्र विधानसभा के बजट सत्र तक के लिए निलंबित करते हुए उनके विधानसभा परिसर में प्रवेश पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। महाराष्ट्र में अपने विधायक के निलंबन पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव का भड़कना स्वाभाविक था, वो भड़के तो यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी औरंगजेब फैंस क्लब को एक कड़ा संदेश दिया।

अबू आजमी के बयान से उपजे विवाद के बीच टी.वी. चैनलों तथा सोशल मीडिया में जिस प्रकार से औरंगजेब के समर्थक निकल रहे हैं, वह अत्यंत चिंताजनक है। यह संभवतः वही लोग हैं, जिन्होंने भाजपा प्रवक्ता नुपुर शर्मा के खिलाफ सर तन से जुदा का नफरत भरा अभियान छेड़ दिया था। अब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 वर्षों के बाद भी औरंगजेब का फैन क्लब जीवित है, जिसे सनातन विरोधी काँग्रेस व इंडी गठबंधन के नेताओं का संरक्षण प्राप्त है? टी.वी. चैनलों पर विरोधी दलों के सभी प्रवक्ता सपा नेता अबू आजमी के बयान का समर्थन कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए बोटी–बोटी काटने जैसे शब्दों का प्रयोग करने वाले काँग्रेस सांसद इमरान मसूद भी इसमें शामिल हैं।

भगवान राम को काल्पनिक बताने वाले आज औरंगजेब को महान बता रहे हैं और अबू आजमी को सही ठहरा रहे हैं। अयोध्या में निहत्थे हिंदू रामभक्तों पर गोलियाँ चलवाकर उनका नरसंहार करवाने वाले औरंगजेब के साथ हैं, तो आश्चर्य कैसा ? अबू आजमी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों के दौरान भी नफरत भरे भाषण दिए थे। महाराष्ट्र में तो अबू आजमी को सांकेतिक सजा मिल चुकी है तथा उसके खिलाफ एफआईआर भी दर्ज हो चुकी है, किंतु यही सही समय है कि मुगल शासक औरंगजेब की क्रूरता का महिमामंडन करके मुस्लिम तुष्टीकरण में संलिप्त राजनीतिक दलों को भी बेनकाब किया जाए।

यह प्रमाणिक ऐतिहासिक तथ्य है कि मुगल शासक औरंगजेब एक बहुत ही क्रूर शासक था। दिल्ली के तख्त के लिए उसने अपने पिता शाहजहाँ को जेल में डाल दिया था और अपने भाई दारा शिकोह का सिर तन से जुदा करके अपने बाप को भेंट में भिजवा दिया था, लेकिन भारत में औरंगजेब के फैन्स की कमी नहीं है। एक अनुमान के अनुसार भारत में मोहम्मद की तरह औरंगजेब नाम भी काफी लोकप्रिय है और अकेले महाराष्ट्र में ही 2 लाख से अधिक लोगों का नाम औरंगजेब है। इसी तरह पाकिस्तान में भी 17 लाख लोगों का नाम औरंगजेब के नाम पर रखा गया है और पाकिस्तान के वित्तमंत्री का नाम भी मोहम्मद औरंगजेब है और इसी से समझा जा सकता है कि औरंगजेब की जबरदस्त फैन फालोइंग भारत से लेकर पाकिस्तान तक है। यही कारण है कि जब भारत के राष्ट्रद्रोही औरंगजेब का महिमामंडन करते हैं, तब पाकितान के लोग भी तालियाँ पीटते हैं।

भारत के विरोधी दलों के नेता विदेशी समाचार पत्रों व एजेंसियों की

झूठी रिर्पोटों पर संसद तक ठप कर देते हैं, किंतु अमेरिका का एक बहुत बड़ा समाचार पत्र न्यूयार्क टाइम्स लिखता है कि "औरंगजेब के 49 वर्षों के कार्यकाल में 46 लाख और हर वर्ष लगभग एक लाख हिन्दू मारे गए थे" तो उस पर विश्वास नहीं करते। भारत का इतिहास ऐसी हजारों घटनाओं से भरा पड़ा है जो ये बताती हैं कि औरंगजेब सबसे क्रूर मुगल शासक था और वह हिन्दुओं से घोर नफरत करता था। औरंगजेब का शासनकाल भारतीय इतिहस का अभिशप्त काल है। वह पाप, द्वेष, दुष्टता, क्रूरता, आतंक तथा निर्दयता की पराकाष्ठा का द्योतक है। फिल्म छावा में औरंगजेब के अत्याचार बस एक उदाहरण भर हैं। उसका प्रत्येक कार्य हिन्दुओं को मतांतरित करने के लिए था।

मुस्तकबल लुबाब के लेखक सफी खाँ ने औरंगजेब के अत्याचारों के विषय में बिलकुल वैसा ही लिखा है जैसा कि वह अत्याचार करता था। सफी खाँ लिखते हैं कि औरंगजेब ने अपनी सेना को हिन्दुओं पर अत्याचार करने की खुली छूट दे रखी थी। औरंगजेब के शासनकाल में जनता को निर्दयता के साथ लूटा जाता था। उसके शासनकाल में ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं बचा था, जहाँ से कर न लिया जाता हो। एक प्रकार से औरंगजेब के शासनकाल में ही हिंदुओं पर जजिया कर लगा दिया गया था। औंरगजेब एक ऐसा मुगल शासक था, जिसकी सेनाओं व उसके सेनापतियों ने उत्तर भारत से लेकर दक्षिण और बंगाल तक चारों तरफ कोहराम मचा दिया था। औरंगजेब फैन क्लब का कहना है कि उसने हिन्दुओं के लिए 80 मन्दिर बनवाए, यह सबसे बड़ा महाझूठ बोला जा रहा है, जबकि वास्तविकता यह है कि उसकी सेनाओं ने 80 से अधिक मंदिरों का विध्वंस किया। औरंगजेब का शासनकाल एक ऐसा विकृत व सबसे घिनौना शासनकाल था, जिसमें हिन्दू महिलाओं और बेटियों के साथ चाहे वह गरीब किसान की ही हो या फिर किसी राजा–महाराजा की उसके साथ सरेआम बलात्कार किए जाते थे, यहाँ तक कि उनकी हत्या करके उनके नग्न शवों को पेड़ों पर लटका दिया जाता था। सर्वत्र लूट, हत्या, धर्म परिवर्तन का बोलबाला था, तब महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी के नेतृत्व में हिंदू शक्ति का पुनर्जागरण हुआ तथा उन्होंने औरंगजेब जैसे आततायी का मुकाबला किया और उसके दांत खटटे कर दिए थे। सफी खां लिखता है कि औरंगजेब की सेना के लगातार हमलों के कारण तथा खेतों में खड़ी फसलों में आग लगा देने के कारण कई बार भयंकर सूखा तक पडा, किंतु उसे इसकी कोई परवाह नहीं थी।

औरंगजेब हिंदुओं से इतना नफरत करता था कि उसने जयपुर के राजा जय सिंह को जहर पिलवा दिया था, क्योंकि उन्होंने उसकी दासता स्वीकार नहीं की थी। औरंगजेब ने संपूर्ण भारत में इस्लाम के नाम पर जो आतंक मचा रखा था, उसका वर्णन पक्षपाती मुस्लिम लेखक साकी मुस्तईद खाँ के मासिर–ए–आलमगीरी की पंक्तियों में मिलती है। वह लिखता है, "18 अपैल 1669 को उसने सभी यवन शासकों को हिन्दुओं के मंदिरों तथा स्कूलों के विनाश के आदेश दिए थे। उस आदेश के अनुसार ही बनारस का आज का काशी विश्वनाथ मंदिर विध्वंस किया गया था।" मंदिर को हथियाकर उसे मस्जिद में बदलना मुसलमानों के लिए गर्व की बात थी। दिसंबर 1669 में ही मथुरा के भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली को भी औरंगजेब ने ही ध्वस्त करवाया था। 1679 में जोधपुर में भी कई मंदिरों व मूर्तियों का विध्वंस किया गया। औरंगजेब ने स्वयं चित्तौड़ जाकर हिन्दुओं के 63 मंदिरों का विध्वंस किया था और जश्न मनाया था।

औरंगजेब द्वारा एक ओर जहाँ भयानक क्रूरता व आतंक का दौर चल रहा था; किंतु उसी कारण कहीं–कहीं हिंदू चेतना का जागरण भी हो रहा था और वह छत्रपति शिवाजी महाराज सहित कुछ अन्य राजाओं के नेतृत्व में औरंगजेब का डटकर मुकाबला भी कर रहा था।

औरंगजेब की क्रूरता की कहानियों का वर्णन स्वयं उसके उस समय के चाटुकार लेखकों तक ने किया है; किंतु वर्तमान समय में जिस प्रकार से एक क्रूर शासक औरंगजेब का समाजवादी नेता व इंडी गठबंधन के नेता मंहिमामंडन कर रहे हैं, यह उनकी दूषित व विकृत मानसिकता का दर्शन ही करा रहा है। छत्रपति शिवाजी के पुत्र सम्भा जी के जीवन पर बनी फिल्म छावा में जो दिखाया गया है, वह एक कटु सत्य है, जिसे झुठलाया नहीं जा सकता और न ही दबाया जा सकता है। अभी तक यह सब दिखाया नहीं जाता था; किंतु अब समय बदल चुका है और सत्य सामने आ रहा है, जिसके कारण सेक्युलर, वामपंथी, तथाकथित समाजवादी, मुस्लिम तुष्टीकरण करने वाले सभी दल पूरी ताकत से छटपटाने लग गये हैं और औरंगजेब का महिमामंडन करने लग गये हैं। किंतु अब इन सभी को यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि अब समय बदल चुका है और उनकी विचारधारा फिर जीवंत होने वाली नहीं है, अपितु उन्हें कड़ी सजा देने का समय आ गया है, अर्थात औरंगजेबी मानसिकता व उनके समर्थकों पर बुलडोजर चलाने का समय आ गया है।

महाराष्ट्र में जब सपा नेता अबू आजमी ने औरंगजेब को महान बताने वाले बयान पर माफी माँग ली और उन्हें सांकेतिक सजा भी मिल गई, तब उसके बाद सपा मुखिया को उनके समर्थन में कतई बयान नहीं देना चाहिए था और ऐसा करके सपा मुखिया ने भाजपा को एक बहुत बड़ा मुददा दे दिया है। अब सपा को आगामी दिनों की राजनीति में बहुत बड़ा नुकसान भी उठाना पड़ सकता है।

ymritvsk1973@gmail.com

क्रूर एवं आक्रांता मुगल शासक हमारे आदर्श कैसे ?

ललित गर्ग

मुगल बादशाह औरंगजेब की क्रूरता, अत्याचार एवं यातनाएँ एक बार फिर बॉलीवुड की फिल्म छावा के कारण सुर्खियों में है। इस बार मामला सिर्फ इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं है बल्कि राजनीति में भी गर्मा गया है। समाजवादी पार्टी के नेता अबू आजमी के बयान ने महाराष्ट्र की राजनीति में उबाल ला दिया है एवं देश के बहुसँख्यक समाज की भावनाओं को आहत किया है। भारत में आज भी एक वर्ग ऐसा है, जो इस्लामिक कट्टरता के साथ जुड़ने में गर्व एवं गौरव की अनुभूति करता है, भले ही इससे देश की एकता एवं अखण्डता क्षत–विक्षत होती हो। इस्लाम के नाम पर जिसने हजारों हिंदू मंदिरों को ध्वस्त किया, तलवार की नोक पर बड़ी सँख्या में लोगों को जबरन मुसलमान बनाया, ऐसे क्रूर एवं सांप्रदायिक शासक औरंगजेब को नेकदिल और महान शासक बताना, आखिर किस तरह की सोच है ? भारत के अतीत को जघन्य अपराधों, कट्टरतावादी सोच एवं यातनाओं से सींचने वाले मुगल शासकों के प्रति यह कैसा मोह एवं ममत्व है ? हिन्दू धर्म एवं सँस्कृति पर आक्रमण करने वाले हमारे आदर्श कैसे हो सकते हैं ? भारत की साँस्कृतिक विरासत एवं समृद्धि को कुचलने वाले महान् शासक कैसे हो सकते हैं ? इन प्रश्नों को लेकर देशभर में छिड़ी बहस हमें आत्मावलोकन एवं मंथन का अवसर दे रही है।

फिल्म 'छावा' कोरी फिल्म ही नहीं, हिन्दुओं को संगठित करने का अभियान भी है, जिसने औरंगजेब के क्रूर एवं बर्बर चरित्र को प्रस्तुत किया है, यह फिल्म मराठा साम्राज्य के दूसरे शासक और छत्रपति शिवाजी महाराज के बड़े बेटे संभाजी महाराज की जिंदगी पर आधारित है। फिल्म में संभाजी के साहस, बलिदान और औरंगजेब के अत्याचारों को दिखाया गया है। संभाजी को औरंगजेब ने छलपूर्वक 1689 में क्रूरता से मरवा दिया था, जिसे फिल्म में भावनात्मक ढंग से पेश करने की सफल एवं सार्थक कोशिश हुई है। इस फिल्म में समाजवादी पार्टी के नेता और महाराष्ट्र विधायक अबू आजमी ने इतिहास को गलत ढंग से पेश करने का आरोप लगाते हुए औरंगजेब की तारीफ करके विवाद को और हवा दे दी। आजमी ने कहा कि औरंगजेब क्रूर शासक नहीं था, उसने कई मंदिर बनवाए और उसके शासन में भारत सोने की चिड़िया था। आजमी ने यह भी दावा किया कि औरंगजेब और संभाजी के बीच की लड़ाई धार्मिक नहीं, बल्कि सत्ता की थी। इस तरह मुगल आक्रांताओं की तारीफ करना सपा के डीएनए में है। हो सकता है कि आजमी का यह औरंगजेब प्रेम एवं मुस्लिम कट्टरतावादी सोच हो, लेकिन औरंगजेब ने संभाजी महाराज को 40 दिनों तक जो यातनाएँ दीं, वह क्या थी ? उनकी आँखें निकाली गईं, जीभ काटी गई, उनके शरीर को लहूलुहान करके उस पर नमक छिड़का और फिर उनकी हत्या कर दी गई, इस तरह क्रूरता एवं बर्बरता बरतने वाले शासक को कैसे आदर्श कहा जाए? असँख्य महिलाओं एवं बच्चों पर अत्याचार करना, जबरन धर्म परिवर्तन कराना, हिन्दू मन्दिरों को तोड़ना, देश की समृद्धि का गलत उपयोग करना कैसे प्रेरणास्पद हो सकता है ?

औरंगजेब पोत राज्यों, राजपूताना और मराठा शासकों के परिवारों का अपहरण कर लेता था और उन्हें बंधक बना लेता था, ताकि वह निर्विरोध शासन

करते हुए सम्पूर्ण भारत पर आधिपत्य कर सके। उसने सभी गैर–मुस्लिम प्रजा और पोत राज्यों से धार्मिक असहिष्णुता कर "जजिया" वसूला। औरंगजेब एक असहिष्णु, क्रूर एवं कट्टरपंथी था और उसकी कट्टरता के कारण करोड़ों लोगों को कष्ट सहना पड़ा। शांति और बहुसंस्कृतिवाद की भूमि भारत में ऐसे अत्याचारी को आदर्श नहीं बनाया जाना चाहिए। यह पहली बार नहीं है, जब औरंगजेब जैसे मुगल शासकों के प्रति प्रेम का प्रदर्शन उमड़ा हो, जब दिल्ली की एक सड़क का नाम औरंगजेब रोड से बदलकर एपीजे अब्दुल कलाम के नाम पर रखा गया था, तब भी बहुत हाय–तौबा मचाई गयी थी। उस समय भी अनेक लोगों ने औरंगजेब को महान शासक बताया था, जबकि इतिहासकारों ने भी दर्ज किया है कि छल से छत्रपति संभाजी को पकड़ने के बाद औरंगजेब ने अत्याचार एवं अमानवीयता की सभी हदें पार करते हुए जुल्म किए। औरंगजेब छत्रपति संभाजी को इस्लाम कबूल करने के लिए मजबूर कर रहा था, लेकिन छत्रपति ने सब प्रकार के कष्ट सहे लेकिन इस्लाम कबूल नहीं किया। जब फिल्मकार ने इस सच को सिनेमा के माध्यम से सबके सामने रखा, तो अबू आजमी ने सच को स्वीकारने की बजाए इतिहास को ही झुठलाने का प्रयास किया। उनके बयान की पक्ष–विपक्ष सबने आलोचना की है। कुल मिलाकर औरंगजेब की तारीफ करने पर चौतरफा घिरे सपा विधायक अबू आजमी को विधानसभा से निलंबित कर दिया गया। उनके खिलाफ दो एफआईआर भी दर्ज की गई हैं। जब मामला और बिगड़ गया तो अबू आजमी ने माफी मांगी। हालांकि उनका कहना है कि उन्होंने जो कहा, वह इतिहासकारों के हवाले से कहा। लेकिन बड़ा प्रश्न यह है कि वे कौन से इतिहासकार हैं, जिनका हवाला अबू आजमी दे रहे हैं ?

उल्लेखनीय है कि अबू आजमी सरीखे कुछ चाटुकार एवं चारण लोग इतिहासकारों में भी हुए हैं। काँग्रेस के शासन में ऐसे इतिहासकारों से मुगल शासन को महिमामंडित करके लिखवाया गया एवं स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाकर हिन्दुस्तान की रग–रग में

उतारा गया है। औरंगजेब जैसे तानाशाही शासकों के क्रूर चेहरे को छिपाने के लिए झूठे–सच्चे कुछ किस्सों का सहारा लिया है; परंतु ये फर्जी इतिहासकार सच को छिपा नहीं सके। सिद्धांत, सच और व्यवस्था के आधारभूत मूल्यों को मटियामेट कर सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक स्तर पर कीमत वसूलने की ऐसी कोशिशों से बहुत नुकसान हो चुका है, अब इन मंसूबों को कामयाब नहीं होने दिया जा सकता। सत्य को ढंका जाता रहा है, पर स्वीकारा नहीं गया और जो सत्य के दीपक को पीछे रखते हैं, वे मार्ग में अपनी ही छाया डालते हैं, भ्रम पालते हैं, झूठ एवं फरेब के सहारे गलत को सही ठहराने की कुचेष्टा करते हैं।

शिवाजी की मृत्यु के बाद उनके बेटे संभाजी ने मराठा साम्राज्य को संभाला। उन्होंने स्वराज्य के संकल्प को ही आकार नहीं दिया, बल्कि एक नवीन राज्य निर्मित किया एवं एक नवीन महत्तर महाराष्ट्र को पुनर्जीवित किया। मराठों में साहसिक वीरता, उत्कृष्ट सहनशीलता, घोर निराशा में आशा की भावना, आत्म विश्वास, उच्च आदर्शों के प्रति निष्ठा, श्रेष्ठ सैनिक नैतिक बल, आत्म बलिदान, राष्ट्रीय और देशप्रेम की उत्कृष्ट भावना जैसे गुण विकसित किए और इससे वे इतने शक्तिशाली हो गए कि आगामी 3 पीढ़ियों में वे उत्तरी भारत में विजेता के रूप में पहुँच गए। छत्रपति शिवाजी एवं उनके वंशज देश के अस्तित्व एवं अस्मिता को कुचलने की हर कोशिश को नाकाम करते रहे हैं।

औरंगजेब की क्रूरताएँ सिर्फ दुश्मनों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसके शिकार उसके भाई और पिता भी हुए। इतिहासकार इरफान हबीब ने औरंगजेब की क्रूरता के अनेक किस्सों को उजागर करते हुए बताया कि मुगल सत्ता पाने की लालच में औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहां को जेल भिजवाया। फिर दारा शिकोह को जंग में हराया। हालांकि जंग हारने के बाद दारा मैदान छोड़कर भाग गया था। लेकिन औरंगजेब ने दारा को गिरफ्तार करवाया और षडयंत्र रचकर उसकी गर्दन कलम करवा दी। औरंगजेब सिर्फ दारा शिकोह की हत्या से खुश नहीं हुआ। उसने हत्या के बाद क्रूरता की हदें भी पार की। एक भाई के साथ ऐसी क्रूरता भारतीय इतिहास में देखने को नहीं मिलती। उसने दारा का कटा हुआ सिर जेल में बंद अपने पिता को भेजा।

मुगल शासक औरंगजेब को लेकर महाराष्ट्र से शुरू हुई बयानबाजी की आंच समूचे देश मे पहुँच गयी है। हिन्दुओं में गहरा आक्रोश एवं रोष है। मांग उठ रही है कि मुगल सम्राट औरंगजेब को बर्बर शासक घोषित किया जाए और भारत में उसके नाम पर रखे गए सभी सड़कों और स्थानों के नाम बदलने के लिए गजट नोटिफिकेशन जारी किया जाए। जैसा कि संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने ओसामा बिन लादेन और फ्रांसीसी व रूसी क्रांति के अवशेषों के साथ किया था। किसी भी राष्ट्र एवं समाज का निर्माण इतिहास के सच और ईमानदारी से ही बनता है और यह सब प्राप्त करने के लिए ईमानदारी के साथ सौदा नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि यह भी एक सच्चाई है कि राष्ट्र, सरकार एवं समाज ईमानदारी से चलते एवं बनते हैं, न कि झूठे इतिहास से। सच को झुठलाना, सच को ढ़ंकना एवं सच की अनभिज्ञता संसार में जितनी क्रूर है, उतनी क्रूर मृत्यु भी नहीं होती। नया भारत–विकसित भारत–समृद्ध भारत को निर्मित करते हुए हमें हमारे गौरवपूर्ण सँस्कृतिक इतिहास को जीवंतता देनी होगी एवं हमारी सँस्कृति एवं इतिहास को कुचलने वाले आक्रमणकारी शक्तियों के विकृत एवं विरूप चेहरों को बेनकाब भी करना होगा।

lalitgarg11@gmail.com

फिल्म छावा, औरंगजेब की कब्र और नागपुर हिंसा

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

छत्रपति सम्भाजी के जीवन पर आधारित छावा फिल्म रिलीज हुई 14 फरवरी 2025 को। इस फिल्म से औरंगजेब द्वारा की गई क्रूरता की पर्तें खुलने लगी, इतिहास के छुपे पन्ने खुलने लगे, जिहादी क्रूरता का रहस्योद्घाटन होने लग गया, जिहाद के नाम पर सदियों से मचाये जा रहे कोहराम का भेद खुलने लग गया। बस क्या था जिहादी और जेहादियों के वोटों कुछ सौदागर दोनों ही बिलबिलाने लग गए, राजनीतिक बयानबाजी आरम्भ हो गई, जिहादियों को भड़काने वालों की फौज खड़ी होने लग गई, चैनलों पर जिहाद के पक्ष में, औरंगजेब के पक्ष में कुतर्कों का अम्बार खड़ा किया जाना शुरू हुआ, जिहादियों की भीड़ एकत्रित करने के यत्न होने लग गए, रमजान की दुहाई और वास्ता दिया जाने लगा, नागपुर में भड़का कर बड़ी भीड़ जुटाई गई, जिहादी उपद्रवियों ने नागपुर को तोड़फोड़ और आगजनी से बर्बाद कर दिया। 18 मार्च 2025 को संध्या 7 बजे नागपुर के महाल (चिटनीस पार्क) और रात्री 10.30 बजे हंसपुरी में जिहादी भीड़ ने हमलाकर हिन्दू कालोनियों में पत्थरबाजी और आगजनी की। रात के 12 बजे तक यह सब उपद्रव लगातार चलता रहा। जिहादियों के हाथों में धारदार हथियार, डंडे और बोतलें थीं।

औरंगजेब की कब्र का प्रतिकात्मक पुतलादहन

फिल्म छावा में दिखाए गए छत्रपति सम्भाजी महाराज पर हुए क्रूरतम अत्याचारों के ऐतिहासिक सत्य पर आधारित दृश्यों से हिन्दू समाज आहत हो रहा था, आक्रोशित हो रहा था। इस आक्रोश में हिन्दू समाज के लोगों ने अत्याचारी औरंगजेब की संभाजीनगर में स्थित कब्र हटाये जाने की मांग की। सम्भाजी महाराज पर हुई क्रूरता और ऐसे ही अनेक क्रूरताओं के लिए इतिहास में औरंगजेब का विवरण है, यह सब जानकर इस आक्रोश को प्रकट करते हुए हिन्दू समाज के लोगों ने हरे चादर में लपेटकर एक गठरी बनाई, जिसे प्रतिकात्मक कब्र कहा गया और उसमें आग लगाई, साथ में औरंगजेब की फोटो जलाया गया, जैसे नेताओं के भी फोटो–पुतले प्रदर्शनों में जलाये जाते हैं, विरोधस्वरूप। यह सब कुछ लोकतंत्र में लोकतांत्रिक रीति से होता आया है अबतक। शांतिपूर्ण विरोध–प्रदर्शन एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया है।

जिहादियों द्वारा फैलाया गया झूठ

जिहादियों ने यह झूठ फैलाया कि हरे चादर पर कुरान की आयतें लिखी हुई थीं। यह सरासर झूठ बोला गया और लोगों को भड़काया गया कि कुरान का अपमान किया गया है, इस्लाम का अपमान किया गया है। शान– ए– गुस्ताखी की झूठी कहानी गढ़ी गई। लोगों को जुटाया गया, योजनाबद्ध तरीके से हमले की तैयारी की गई, बाहर से भी लोग बुलाये गए, पेट्रोल बम, डंडे और धारदार हथियारों का प्रबंध किया गया। क्योंकि सभी जिहादियों के हाथों में कुछ न कुछ था। सभी उपद्रव मचाने में बराबर के भागीदार थे। नारा–ए–तकबीर, अल्लाह–ओ–अकबर और लब्बेक लब्बेक के नारे लगाए जा रहे थे।

लब्बेक का मतलब

लब्बेक का मतलब होता है – "मैं हाजिर हूँ।" हुजूर कहते थे कि जो मुझे नबी नहीं मानता, इस धरती पर खुदा का भेजा पैगाम लाने वाला नहीं मानता, मेरी बातों में विश्वास नहीं करता, मेरा मजाक उड़ाता है, मेरी आलोचना करता है, उसकी आवाज कौन हमेशा के लिए शांत करेगा? कौन उसका सर काट कर लाएगा?

तभी शोर उठता, "लब्बेक... लब्बेक. .. लब्बेक..." (मैं हाजिर हूँ, मैं हाजिर हूँ, मैं हाजिर हूँ...)। मतलब काफिरों का सीर काटकर लाने की सहमति किया जाता है लब्बेक लब्बेक कहकर। मैं लाउंगा...मैं लाउंगा.......मैं लाउंगा। यह सीधी–सपाट घोषणा है हिंसा करने की। हिंसा–हत्या

करने के लिए आवाहन करना और उसके बाद सार्वजनिक घोषणा कर के दी गई सहमति है लब्बेक... लब्बेक... लब्बेक। ऐसा नारा लगाने वालों पर दूसरे धर्म के लोगों पर इरादतन हत्या की कोशिश करने का मुकदमा चलाना चाहिए। यह धार्मिक स्वतंत्रता के मौलिक अधिकारों का हनन भी है और हत्या की साजिश और घोषणा भी।

नागपुर में हैं मात्र 11.95 प्रतिशत मुसलमान

नागपुर कोई मुस्लिम बहुल महानगर नहीं है। नागपुर में 69.46 प्रतिशत हिन्दू है और मात्र 11.95 प्रतिशत ही मुस्लिम जनसँख्या है। अब प्रश्न उठता है कि झूठ फैलकर हिंसा का षड्यंत्र रचने का साहस कैसे किया गया। जहाँ अधिक अनुपात में मुस्लिम जनसँख्या है, वहाँ आए दिन जिहादी हिंसा की घटनाएँ होती रहती हैं। लेकिन ऐसे कम मुस्लिम आबादी वाले शहरों में इतनी व्यापक स्तर की हिंसा प्रायः दृष्टिगोचर नहीं होती है, जो नागपुर में घटित हुई है। यह व्यापक योजना और षड्यंत्र का परिणाम है। पीएफआई जैसे संगठन प्रतिबंधों के बाद भी सक्रीय हैं, उनकी भूमिका की जांच आवश्यक है। इसमें एसडीपीआई जैसे राजनीतिक दलों की भी भूमिका की जांच आवश्यक है।

एएसआई का औरंगजेब की कब्र पर शेड डालना गैर कानूनी

आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया ने खुल्लताबाद, शंभाजीनगर में औरंगजेब की कब्र पर लोहे की चादरों का शेड बना दिया है। कहा गया है कि यह सुरक्षा के लिए किया गया है। सुरक्षा के लिए घेराव करना तो समझ में आता है, लेकिन शेड डालना एक निर्माण गतिविधि है, जो एएसआई नहीं कर सकती। एएसआई का काम केवल कंजर्वेशन और प्रिजर्वेशन करने का है न कि निर्माण करने का। एएसआई की यह गतिविधि गैर कानूनी है।

औरंगजेब क्रूर आक्रांता था इसीलिए उसकी कब्र का संरक्षण न करे एएसआई

औरंगजेब कोई सभ्य और प्रजापालक शासक नहीं था। औरंगजेब आक्रमणकारी था, जिनके कर के पैसों से पलता था, उन्हीं हिन्दूओं पर सतत आक्रमण करता रहता था। 46 लाख हिन्दूओं का कत्ल करवाया था औरंगजेब ने (न्यूर्योक टाईम्स)। हजारों मन्दिर तोड़े थे। उसने सत्ता के लिए अपने पिता को जेल में डाल दिया था और अपने तीनों भाईयों की हत्या कर के उनके सिर काटकर जेल में बंद अपने पिता शाहजहाँ को भेंटस्वरूप भेज दिया था। अनगिनत गायों की हत्या और असँख्य बलात्कार की घटनाओं का अपराधी था औरंगजेब। ऐसे अपराधी के पक्ष में खड़े लोग भी अपराधी ही समझे जाने चाहिए। जो अपने बच्चों का नाम औरंगजेब रखते हैं, उनको भी अपराध का समर्थक माना जाना चाहिए।

औरंगजेब द्वारा तोड़े गए मन्दिरों की सूचि

1620 से 1707 तक औरंगजेब का राज रहा। 9 अप्रैल 1669 को औरंगजेब ने मन्दिरों को गिराने का आदेश दिया, जो उसके शासन वाले सभी 21 सूबों में लागू हुआ। इस आदेश में सभी विद्यालयों को भी गिरा देने का आदेश सम्मिलित था। यहाँ हिन्दूओं की धार्मिक प्रथाओं और त्योहारों को मनाने पर भी रोक लगा दी गई। मआसिर– ए– आलमगीरी, मुस्तैद खान (चैप्टर–12)। सोमनाथ का ज्योतिर्लिंग मन्दिर, काशी विश्वनाथ का

ज्योतिर्लिंग मन्दिर, मथुरा का कृष्ण जन्मभूमि मन्दिर, अयोध्या के सैकड़ों मन्दिर, मथुरा का मदनमोहन मन्दिर, मथुरा का केशवराय मन्दिर, मथुरा के 78 अन्य मन्दिर, अयोध्या के स्वर्गद्वारी मन्दिर और ठाकुर मन्दिर, वडनगर के हथेश्वर मन्दिर, उदयपुर के झीलों के किनारे बने तीन मन्दिर, उज्जैन के आसपास के मन्दिर, सवाई माधोपुर में मलारना मन्दिर, गोलकुंडा के 200 मन्दिर, हुबली में 17 मन्दिरों पर मस्जिद बनाई दी गई, इन्दौर का सोमनाथ महादेव मन्दिर, बीजापुर का मन्दिर, विदिशा का विजय मन्दिर, अहमदाबाद के सरसपुर में स्थित गणेश जी का चिंतामन मन्दिर, चितौड़– उदयपुर– जयपुर के आसपास के 300 मन्दिर, सरहिन्द के पास की गाँव का सिख मन्दिर। इन मन्दिरों के तोड़े जाने का विवरण उस समय दरबारी मुसलमानों द्वारा लिखे गए पुस्तकों में मिलता है। विवरण और भी विस्तृत है, मैंने उनमें से कुछ की गिनती कराई है, जिससे औरंगजेब की हिन्दूओं के प्रति घृणा को ठीक से समझा जा सके।

नागपुर हिंसा का मास्टरमाइंड वैसा ही क्रूर जिहादी

नागपुर हिंसा का मास्टरमाइंड फहीम खान भी औरंगजेब के जैसा क्रूरतम जिहादी है, इसीलिए इसके समेत 6 लोगों के खिलाफ देशद्रोह का मुकदमा दर्ज हुआ है। फहीम माइनॉरिटि डेमोक्रेटिक पार्टी का शहर अध्यक्ष है। इसने 500 से अधिक लोगों को एकत्र किया और हिंसा फैलाई। नागपुर में हिंसा और आगजनी आरम्भ होने से पहले इसने जिहादी और भड़काऊ भाषण देकर सबको हिंसा–आगजनी के लिए उकसाया था। फहीम खान नागपुर लोकसभा सीट पर केन्द्रीय मंत्री नीतिन गडकरी के खिलाफ 6.5 लाख वोटों से चुनाव हार गया था। इस हिंसा में डिप्टी पुलिस कमिश्नर स्तर के तीन पुलिस अधिकारी समेत 33 पुलिसकर्मी घायल हो गए थे। ज्ञात हो कि फहीम खान के घर पर बुलडोजर चल चुका है। इन जिहादियों के खिलाफ और भी सख्त कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए, जिससे पीड़ित जनता और पुलिसकर्मियों को न्याय मिल सके।

मृत्युंजय दीक्षित

जाति यानि क्या?

आजाद भारत में पूज्य बाबा साहब अम्बेडकर इस सारे 'सहभागी आन्दोलन' के मुख्य सूत्रधारों में एक थे, लेकिन अच्छी बात यह थी कि सम्पूर्ण समाज भी इसके पक्ष में था।

तोहे मोहे–मोहे तोहे अंतर वैसो।
कनक कटक जल तरंग जैसो।।

जाति यानि क्या ? भारत में जाति और उस आधार पर होने वाली राजनीति की शुरुआत आज से हुई ऐसा बिलकुल भी नहीं है। यह अलग विषय है कि दुनियाँ ने किस–किस अर्थ में जाति को समझा है ? जहाँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार कहते हैं कि 'हिन्दू एक जाति है' वहीं कुछ लोग हिन्दू के भीतर व्याप्त असमानता को आधार बनाकर जाति की भिन्न–भिन्न अवधारणा को प्रस्तुत करते हैं।

हिन्दू एक जाति है। इसकी मान्यता वर्षों से इस देश में रही है, जिसका आधार मौलिक भी है। जब हम एक जैसे आचार–विचार को मानते हैं, तो फिर कोई बड़ा और कोई छोटा कैसे हो सकता है? जाति को लेकर समाजशास्त्री रिजले मानते हैं कि 'जाति ऐसे परिवारों या परिवार समूह का संग्रह है, जिनके समान नाम हैं, जो अपनी जाति की उत्पत्ति किसी पौराणिक या ऐतिहासिक व्यक्ति से मानते हों, जो एक ही पुश्तैनी व्यवसाय करने का प्रदर्शन करते हों। जिन्हें ऐसे सभी दूसरे व्यक्ति जो इस सम्बन्ध में राय देने के अधिकारी हों, वे इन्हें एक सामाजिक बिरादरी मानते हों। रिजले मानते हैं कि व्यवसाय भी जाति को परिभाषित करती है। वहीं समाजशास्त्री केतकर मानते हैं कि 'जाति एक ऐसा सामाजिक समूह है, जिसकी दो विशेषता है, पहली जिसमें वही सदस्य हो सकते हैं, जो किसी सदस्य के बेटे हों और इसमें ऐसे सभी व्यक्ति शामिल हैं, जो इस प्रकार जन्मे हैं। वहीं दूसरे अर्थ में केतकर कहते हैं कि जिसमें सदस्य ऐसे सामाजिक कानून के जरिए इस समूह के बाहर विवाह नहीं कर सकते'। इसी प्रकार से बेतली मानते हैं कि 'जाति एक खंडित व्यवस्था है। इसका अर्थ है कि लोग विभिन्न संदर्भों में अपने आपको विभिन्न श्रेणियों की इकाईयों का सदस्य समझते हैं'। केथलिन ग्राफ के अनुसार जाति जन्म स्थिति के आधार पर उच्च व निम्न पद वाले समूह होते हैं, जो आमतौर पर अंर्तविवाही होते हैं तथा एक पेशे के साथ जुड़े होते हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने जाति को लेकर तमाम सिद्धान्तों का अध्ययन कर माना है कि जाति के निर्माण का आधार पेशा, खान–पान आदि के इतर जाति सर्वोच्चता एक अहम कारण है। वहीं माइकल पूको ने शक्ति को लेकर अपने सिद्धांत को बताया है, "मानवीय प्रवता है कि वह शक्ति को अपने भीतर रखना चाहता है।" जाति की अवधारणा को इस अर्थ में भी समझा जा सकता है, जिसके पास शक्ति है, वह उसे भोग करता है, जिसके पास नहीं है, वह शक्ति को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता है। पश्चिम की चिन्तन धारा ने भारत के जाति विचार के अर्थ को काफी हद तक खंडित किया है।

पश्चिम का समाज कबीलों में रहने वाला समाज रहा है, जिसे हम क्लैन भी कहते हैं? यही क्लैन पूर्व में कास्ट के रूप में आइडेंटिफाइ हुआ होगा। हम जानते हैं कि कास्ट जो पुर्तगीस शब्द है, जो नस्ल, वंश एवं वर्ग के रूप समझा जाता है। अब यह भारत के परिप्रेक्ष्य में कैसे समझा जाए, यह बड़ा मुश्किल है। इसके लिए हमें हमारे भारतीय दर्शन की

ओर जाना होगा। भारत के दर्शन को 20 के दशक में बद्रीशाह टुलधारीय जैसे विद्वानों ने जरूर दुनियाँ के सामने पुनः लाने का काम किया है। टुलधारीय जी ने कास्ट के अर्थ में जाति के मायनों को नकारते हुए कहा कि हिन्दुस्थान में रहने वाले सभी एक जाति के हैं, अँग्रेज भिन्न जाति के हैं। वह देश के अर्थ को समझाते हुए कहते हैं कि 'देश का अर्थ होता है कि पृथ्वी का ऐसा भाग, जिसमें कोई जाति सन्तान रूप से बसी हुई है, अर्थात् ऐसे सम्बन्ध से है, जो उस भूमि के अतिरिक्त और किसी भूमि से ना हो सके। वहीं अगली बात में वह कहते हैं कि कोई देश तब तक देश नहीं, जब तक उस देश में रहने वाली जाति का अपने देश के प्रति माँ और संतान जैसा संबंध ना हो'।

टुलधारीय जी दैशिक शास्त्र के पृष्ठ सँख्या 16 में 'जाति शब्द के अर्थ' में पश्चिम की जाति परिभाषा को नकार देते हैं, जिसमें पश्चिम का मानना है कि एक मत एक रीति को मनाने वाले, एक भाषा बोलने वाले, एक राज्य के अधीन रहने वाला जन समुदाय जाति है। बल्कि वे कहते हैं कि जाति का पता तो जन समुदाय के प्राकृतिक एकत्व से ही तय किया जा सकता है, मानव एक जाति है, क्योंकि प्रवृत्ति उसकी समान है। उसके जन्म मृत्यु सभी तो एक हैं, फिर भेद क्यों? रविदास जी ने भी तो यही कहा है कि 'जात–पात के पेर महि, उरझि रहइ सब लोग। मानुषता कूं खात हइ, रैदास जात कर रोग। जिसके अर्थ को देखें तो रविदास जी कहते हैं जाति–पाति के चक्कर में यह संसार पड़ा रहता है और यह जात–पात का विचार पूरी मानवता को ही समाप्त कर रहा है। इसी तरह स्वामी विवेकानन्द जी भी जाति के दैशिक अर्थ जो अपने भारत का है, उसका अर्थ बताते हुए कहते हैं कि 'जब तक हिन्दू जाति अपने पूर्वजों की विरासत को नहीं भूलती, तब तक धरती की कोई भी शक्ति उन्हें नष्ट नहीं कर सकती'।

इसीलिए वीर सावरकर ने भारत को हिन्दू जाति के अर्थों में ही स्पष्ट करने का प्रयास किया, भारत में जाति का अर्थ धीरे–धीरे संकुचित होता चला गया। जो कि आज हिन्दू समाज के भीतर 6700 जातियों का समूह बन गया है, प्रत्येक जाति में कितनी ही उप–जाति और फिर उन जातियों में भी जाति है। इन सभी ने संगठित हिन्दू समाज के भीतर तमाम प्रकार की विभिन्नता को पैदा किया है, लेकिन हिन्दू समाज की विशालता ने इसे भी अपने भीतर समाहित किया है। समाज में सबको साथ लेकर चलने की वृत्ति ने हिन्दू समाज को पहले से ही काफी प्रगतिशील बनाया है। इसी का तो परिणाम है कि हिन्दू समाज ने बार–बार अस्पृश्यता जैसे कुकृत्य को कभी भी नहीं स्वीकारा। वहीं इस समाज को विशेष सुविधा मिले इस विचार को भी अपनाया। हम सब जानते हैं कि जाति भारत की एक सत्यता है और इस जाति के आधार पर उत्पीड़न भी एक हकीकत है, जिसे कभी भी नकारा नहीं जा सकता।

समाज में समस्या तो है, अगर समस्या है, तो उसके समाधान की ओर भी हमें बढ़ना ही होगा और कहीं कुछ गलत हुआ, तो उसका खामियाजा भी भुगतना ही होगा। इसी सबके लिए संविधान निर्माताओं ने प्रतिनिधित्व की बात की, जिसे हम आरक्षण के रूप में जानते हैं। भारत में आरक्षण की शुरुआत भी अँग्रेजी शासनकाल में प्रारंभ हुई। वर्ष 1852 के दौरान भारतीय नागरिकों को अँग्रेजी नौकरियों में आरक्षण अर्थात् प्रतिनिधित्व दिया गया। वहीं 1912 में मुस्लिम वर्ग द्वारा माँगे जाने पर अँग्रेजी शासन की विधायिका एवं स्थानीय निकायों में मुस्लिम प्रतिनिधित्व दिया गया, जो बाद में सिख, पारसी, एंग्लो आदि तक होते–होते 1932 में पूना पैक्ट द्वारा हिन्दू समाज के भीतर सामाजिक भेदभाव से पीड़ित समाज हेतु भी प्रतिनिधित्व की व्यवस्था की गई।

वहीं आजादी के बाद संविधान द्वारा प्रतिनिधित्व की माँग को संविधान का हिस्सा बनाया गया, विधायिका से लेकर प्रशासन तक सभी स्थानों में प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित किया गया। भारत की राजनीति में अपने प्रारंभ के काल से ही जाति और उस आधार पर होने वाली राजनीति का बड़ा बोलबाला रहा है, भारत में आजादी के पूर्व भी दक्षिण में जस्टिस पाटा थी, तो वहीं भारत के उत्तरी छोर पर आर्य समाजी नेता स्वामी अछूतानन्द द्वारा समाज के अस्पृश्य माने जाने वाले वर्गों के प्रतिनिधित्व की माँग हो रही थी, साथ ही साथ जाटव मेन्श एसोसियशन के नेता धर्मवीर जाटव जैसे नेता अस्पृश्य समाज के भीतर शिक्षा के प्रसार–प्रचार पर काम कर रहे थे। वहीं ज्योतिबा फुले, साहू जी महाराज, महादेव गोविन्द रानाडे आदि महाराष्ट्र में यह काम कर रहे थे, इसी प्रकार से आदि–धमा आन्दोलन हो रहा था, जो भिन्न–भिन्न प्रांतों में आदि–धमा के नाम से हो रहा था। आदि–कर्नाटक, आदि–आंध्र के रूप में भग्गया रेड्डी वर्मा एवं पंजाब में बाबू मंगूराम आदि ने जाति संगठन और उनकी आकांक्षाओं को उभारने का काम किया। आजाद भारत में पूज्य बाबा साहब अम्बेडकर इस सारे 'सहभागी आन्दोलन' के मुख्य सूत्रधारों में से एक थे, लेकिन अच्छी यह बात थी कि सम्पूर्ण समाज भी इसके पक्ष में था। तोहे मोहे–मोहे तोहे अंतर वैसो। कनक कटक जल तरंग जैसो।।

(वीर अर्जुन राष्ट्रीय संस्करण से साभार)

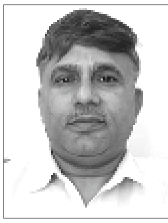

भारत की जीत के विजय यात्रा पर बरसे पत्थर और बम

डॉ. उमेश प्रताप वत्स

12 वर्षों के बाद भारत एक बार फिर से क्रिकेट चैम्पियनशिप ट्राफी जीतकर विश्वविजेता बना है। यह जीत इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि भारत विश्व का एकमात्र ऐसा देश है, जो इस ट्राफी में तीन बार विजयी रहा। भारत तीन बार टूर्नामेंट जीतने वाली सबसे सफल टीम है, जबकि ऑस्ट्रेलिया ने दो बार और दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड, श्रीलंका, वेस्टइंडीज और पाकिस्तान ने एक–एक बार इसे जीता है। टूर्नामेंट के हर संस्करण में अब तक सात राष्ट्रीय टीमें खेल चुकी हैं। जब जीत इतनी बड़ी हो तो उत्सव भी बड़े स्तर पर ही मनाया जाना था, जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक अटक से कटक तक मनाया भी गया। मणिपुरी हो या तमिल, पंजाबी हो या बंगाली सभी ओर ढोल–बाजे, नाच–गाना, होली–दिवाली मनाई जा रही थी। वैसे ही उज्जैन आदि स्थानों पर भी मनाया जाना स्वाभाविक था।

चैम्पियंस ट्रॉफी में भारत की जीत के बाद एक तरफ पूरे देश में लोगों ने जमकर उत्सव मनाया, तो, वहीं कुछ शहरों में लाठीचार्ज और पत्थरबाजी भी देखने को मिली। हंगामें की घटनाएँ मध्य प्रदेश के महू, महाराष्ट्र के नागपुर और तेलंगाना में हैदराबाद के करीमनगर से सामने आई।

उल्लेखनीय है कि भारत ने न्यूजीलैंड को 4 विकेट से करारी शिकस्त देकर चैम्पियन ट्रॉफी अपने नाम कर ली, जिस कारण पूरा देश जीत के इस उत्सव में डूब गया, तो वहीं देश के कुछ शहरों में इस दौरान शांतिदूतों द्वारा पत्थरबाजी व पेट्रोल बम फेंकने की घटनाएँ भी सामने आई। मध्य प्रदेश के महू में क्रिकेट प्रेमियों की भीड़ पर जमकर पथराव व तलवारबाजी की गई। वहीं काँग्रेस शासित राज्य तेलंगाना में हैदराबाद के करीमनगर और महाराष्ट्र के नागपुर में पुलिस ने भीड़ पर जमकर लाठियाँ भांजी।

ज्ञात सूत्रों के अनुसार फाइनल मैच जीतने के तुरंत बाद स्थानीय लोग इंदौर जिले के महू कस्बे में भी जीत से उत्साहित होकर विजय यात्रा निकालने लगे। इधर रमजान का महीना भी चला हुआ है, जिसे पवित्र मानकर हर मुस्लिम को मानवता का प्रदर्शन करना चाहिए था, किंतु न जाने किसके उकसावे में शांतिदूतों की भींड़ ने न केवल पत्थरबाजी की, अपितु तलवारबाजी व पेट्रोल बम से आगजनी भी की। इंदौर के महू में हुई इस हिंसा में विजय यात्रा में शामिल कई लोग घायल हुए। सभी घायल हॉस्पिटल में उपचार के लिए पहुँचे। घायलों ने बताया कि जामा मस्जिद के बाहर जब विजय यात्रा पहुँचा, तो शांतिदूतों के द्वारा उन्हें भारत माता की जय और वंदे मातरम के नारे लगाने से रोका गया, इसके बाद विवाद शुरू हो गया और विवाद पत्थरबाजी में बदल गया।

चैंपियंस ट्रॉफी में भारत की ऐतिहासिक जीत पर मध्यप्रदेश के महू में हुए जीत का उत्सव मानने वाले लोगों पर हमले ने देश के लोगों को अचंभित और आक्रोशित कर दिया है। विहिप के प्रवक्ता विनोद बंसल ने इस हमले को जिहादी हमला बताते हुए कहा कि भारत की जीत पर चार तरह के लोग खफा हैं, उसमें न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, काँग्रेस पार्टी और जिहादी शामिल हैं। उन्होंने कहा कि भारत की जीत पर मध्यप्रदेश के महू में मस्जिद मार्ग व कुछ अन्य स्थानों से जा रहे विजय यात्रा पर जिहादियों द्वारा पत्थर, डंडों व पेट्रोल बम से किए गए हमले में आधा दर्जन गाड़ियों को आग के हवाले कर दिया गया तथा अनेक क्रिकेट प्रेमी घायल हुए हैं। उन्होंने कहा कि पाक परस्त मानसिकता से ग्रसित इन भारत विरोधी लोगों को क्या भारत में रहने का अधिकार होना चाहिए? स्वदेश की जीत पर यदि ये खुश नहीं हो सकते, तो, उन्हें अपनी मस्जिद, मदरसों व घरों में बंद

रहना चाहिए; किंतु क्या भारत का खाने और पाक को गाने वाले अब हमें अपने देश की जीत का जश्न भी नहीं मनाने देंगे? उन्होंने कहा कि इस मानसिकता के समूल नाश की आवश्यकता है।

यद्यपि रमजान का महीना चल रहा है। इस दौरान भारत की फाइनल मैच में जीत का अवसर कोई योजनाबद्ध नहीं, अपितु स्वाभाविक रूप से आया है और जीत पर देश के लोगों द्वारा उत्सव मनाना भी स्वाभाविक था। फिर आम क्रिकेट प्रेमी लोग यदि उत्सव में मस्त होकर भारत माता की जय के जयघोष लगा रहे हैं, वंदे मातरम् बोल रहे हैं, तो इसमें गलत क्या है ? यदि सभी धर्मों के लोग इसे देश की सांझी जीत मनाकर जयघोष लगाते, तो झगड़े के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था, किंतु विचारणीय यह है कि हर बार की तरह किसी भी विवाद के बाद मुँह पर कपड़ा बाँधे पत्थरबाज लोग अचानक कहाँ से प्रकट हो जाते हैं? कहाँ से इनके पास तलवारें, धारदार हथियार और पेट्रोल बम एकदम आ जाते हैं? यह सारी तैयारी ही इस बात की ओर संकेत करती है कि हिंदुओं के किसी भी कार्यक्रम में पत्थरबाजी आदि किसी विवाद के कारण नहीं, अपितु पूर्व तैयारी के साथ योजनाबद्ध ढंग से की जाती है। मुस्लिम समुदाय सदैव राजनीति के हाथों की कठपुतली बनता आया है। वोटों के लिए तुष्टीकरण करने वाले तुष्टिकरणवादियों के उकसाने पर तथाकथित शांतिदूत अशांति करने के लिए तैश में आ जाते हैं और फिर कोई पुलिस की गोली का शिकार होता है, तो कितने ही जेलों में सालों साल सड़ते रहते हैं और तुष्टिकरणवादियों को इनकी लाशों पर राजनीति करने का अवसर मिल जाता है।

इसी तरह संभल में शुक्रवार अर्थात् जुम्मे के दिन हिंदुओं के पावन पर्व होली की तिथि पड़ने पर उत्तरप्रदेश पुलिस के सी.ओ. अनुज चौधरी ने भाईचारा कायम रखने के लिए एक बैठक बुलाई। शांति समिति की बैठक के बाद मीडिया से बातचीत में अनुज चौधरी ने कहा था, 'जिस प्रकार से मुस्लिम ईद का इंतजार करते हैं, उसी तरह हिंदू होली की प्रतीक्षा करते हैं। होली का दिन साल में एक बार आता है, जबकि जुम्मे की नमाज साल में 52 बार आती है। यदि किसी को लगता है कि होली के रंग से उसका धर्म भ्रष्ट होता है, तो वह उस दिन घर से ना निकले।'

उन्होंने कहा कि अगर कोई घर से निकलता है, तो दिल बड़ा होना चाहिए अर्थात् कोई छुट–फुट रंग का छींटा लग भी जाए, तो उसे बात का बतंगड़ न बनाया जाए। उन्होंने कहा कि 'यदि आप अपने धर्म का सम्मान करते हों, तो दूसरे को भी कीड़ा–मकोड़ा मत समझो, उसका भी सम्मान करो, जब आदमी ये सम्मान की बात सोच लेगा, तो उसके अंदर कोई गुस्सा, नफरत नहीं रहेगी, जब लगेगा कि अल्लाह भी वही है, भगवान भी वही है, तो सब शांति से निपट जायेगा।'

अब यदि निष्पक्ष होकर सोचें, तो सी.ओ. अनुज चौधरी ने क्या अनुचित कहा है। इनका बयान बिल्कुल स्पष्ट है कि अराजकता सहन नहीं की जायेगी। दोनों पक्ष शांति से एक–दूसरे का सम्मान करें। उनके प्रयासों से यदि सब कुछ शांति से निपट जाता है, तो फिर तुष्टीकरण गैंग के हाथ क्या लगता? खाली हाथ न रह जाए, इसी को ध्यान में रखते हुए तुष्टीकरण गैंग द्वारा चौधरी के बयान को धार्मिक भावनाओं को भड़काने वाला बताकर बहुत ही निचले स्तर की टिप्पणियाँ की गईं। सपा के नेता रामगोपाल यादव कह रहे हैं कि हमारी सरकार आयेगी, तो सी.ओ. चौधरी को जेल की हवा खिलायेंगे। राजनीतिक असंवेदनशीलता का उदाहरण आम आदमी पार्टी के दोयम दर्जे के नेता संजय सिंह भारत की आन–बान–शान रहे ओलम्पियन रेसलर सी.ओ. अनुज चौधरी को लंफडर सी.ओ. बोल रहे हैं। ऐसी निम्न स्तर की गाली देकर संजय सिंह ने अपना स्तर तो दिखा दिया, किंतु क्या ये छुट–फुट नेता भारत की शान कहे जाने वाले खिलाड़ियों को यूँ ही अपमानित करते रहेंगे। खेल रत्न ओलम्पियन योगेश्वर दत्त जी ने बहुत ही सरल शब्दों में कहा है कि खिलाड़ी निडरता के साथ–साथ स्पष्ट वक्ता भी होता है और अनुज चौधरी ने कानून व्यवस्था को बनाए रखने के लिए कानून के दायरे में ही बयान दिया है और स्पष्ट बात कही है। मौके के अधिकारी को तय करना होता है कि दंगा फसाद रोकने के लिए क्या आवश्यक कदम उठाने हैं। अनुज चौधरी 84 किलो ग्राम वजन में भारत के चैम्पियन रहे हैं।

उन्होंने एशियाई खेल 2002 और 2006 में 74 किग्रा वर्ग में शीर्ष दस में स्थान प्राप्त किए, राष्ट्रमंडल खेल 2002 तथा 2010 में दो रजत पदक और एशियाई कुश्ती चैंपियनशिप में दो कांस्य पदक जीते और 2004 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में भी अपने देश भारत का प्रतिनिधित्व किया है।

मुझे ध्यान है कि जब उत्तरप्रदेश के सहारनपुर जिले की पुलिस लाइन में 2001 में अन्तर जनपदीय मेरठ जोन की कुश्ती प्रतियोगिता हो रही थी, तो सहारनपुर के तत्कालीन वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री आलोक शर्मा जी ने मुझे रेफ्रीशिप के लिए सहयोग देने हेतु बुलाया, क्योंकि तब मैं भी 63 किलोग्राम में राष्ट्रीय चैम्पियन रह चुका था और गीता व बबीता जैसी उभरती महिला पहलवान आदि की हरियाणा फैस्टिवल कुश्ती प्रतियोगिता में कई बार रेफ्रीशिप करा चुका था। मैंने 2001 में जब अनुज चौधरी की कुश्ती करवाई, तब वह 74 किलोग्राम में फाइट कर रहा था। मैंने तब उसका आकलन किया था कि वह बहुत ही सौम्य, शांत स्वभाव व अपने में ही मस्त रहने वाला व्यक्ति था। आज भी वह अधिक बोलने वाला व्यक्ति नहीं है, किंतु ड्यूटी के प्रति जो दृढ़ता चाहिए, वैसा दृढ़ संकल्प अनुज चौधरी ने दिखाया, तो उसके सीधे सरल बयान को राजनीति में रंग कर मक्कार, कम शिक्षित, लफंडर जैसे शब्दों से अपमानित करना क्या नेताओं कि उस सोच को नहीं दर्शाता है कि ऑफिसर्स कोई भी हो हमारे जूते के नीचे ही रहने वाले हैं। संजय सिंह व रामगोपाल यादव जैसे जहरीली सोच के नेताओं ने न केवल सीओ अनुज चौधरी को गालियाँ दी है, अपितु पूरी पुलिस फोर्स का मनोबल तोड़ने का जघन्य अपराध किया है, जिसका जवाब शीघ्र ही जनता दे भी रही है और पुनः इनको रसातल में पहुँचाकर अच्छे से देगी।

umeshpvats@gmail.com

सनातन सँस्कृति में छिपा है पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान

अजय कुमार (लखनऊ)

भारतीय सनातन सँस्कृति और पर्यावरण के बीच युगों पुराना नाता है। एक सनातन सँस्कृति ही है, जिसमें प्रकृति को केवल अस्तित्व का आधार ही नहीं बल्कि पूजनीय माना गया है। आधुनिक विज्ञान में जिस पर्यावरणीय संतुलन की वकालत की जाती है, उस संतुलन को सनानत परंपराओं में सदियों से साधा जा रहा है। सनातन सँस्कृति में प्रत्येक प्राकृतिक तत्व को दिव्य माना गया है। हमारे लिए सूर्य, जल, वायु और वनस्पति सब देवतुल्य हैं। जरूरत के समय पेड़ों को काटने से पहले उनकी अनुमति माँगने और तुलसी पत्र तोड़ते समय विनम्र भाव से क्षमा मांगने की विनम्रता केवल हमारी संस्कृति में ही है। हम सूर्यास्त के बाद फूल–पत्तियाँ इसलिए नहीं तोड़ते, क्योंकि तब वे विश्राम की अवस्था में होते हैं। न केवल भारत में बल्कि विदेशों में बसा हिंदू समुदाय भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह कर रहा है। इस बात को अब विदेशों में भी स्वीकार कर, इससे प्रेरणा ली जाने लगी है।

ब्रिटेन के इंस्टीट्यूट फॉर द इम्पैक्ट ऑफ फेथ इन लाइफ (आईआईएफएल) की ओर से हाल में किए गए एक अध्ययन में यह निष्कर्ष सामने आया है। अध्ययन की रिपोर्ट में उल्लेख है कि पर्यावरण सुरक्षा के मुद्दे पर ब्रिटेन में हिंदू समुदाय बाकी समुदायों की तुलना में सबसे ज्यादा सक्रिय है। अधिकांश हिंदू पर्यावरण के लिए कुछ न कुछ कर रहे हैं। कण–कण में भगवान के होने का विश्वास उनका प्रेरणास्रोत है। 64 फीसदी हिंदू 'रीवाइल्डिंग' यानी इको सिस्टम को नई जिंदगी देने में शामिल हैं। 78 प्रतिशत हिंदू अपनी आदतों में इसलिए बदलाव लाते हैं, ताकि पर्यावरण को नुकसान कम हो। 44 प्रतिशत हिंदू पर्यावरणीय संगठनों से जुड़े हैं। अध्ययन में हिंदू, मुस्लिम और ईसाई समुदायों के पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण और गतिविधियों का विश्लेषण किया गया है। रिपोर्ट से पता चलता है कि ब्रिटेन के 82 फीसदी ईसाई धर्म को पर्यावरण सुरक्षा से जोड़ते हैं, पर उनके सुरक्षा संबंधी काम सबसे कम हैं। 31 फीसदी ईसाई जलवायु परिवर्तन को ही नकारते हैं, जो किसी भी धार्मिक समूह में सबसे ज्यादा है। 92 प्रतिशत मुस्लिम व 82 प्रतिशत ईसाई मानते हैं कि उनका धर्म पर्यावरण की देखभाल करने की जिम्मेदारी देता है, लेकिन उनकी यह सोच व्यवहार में नहीं बदलती। अगर हिंदू पर्यावरण संरक्षण के लिए सक्रिय हैं, तो इसका मुख्य कारण यह है कि हिंदू धर्म में 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना निहित है, जो संपूर्ण सृष्टि को एक परिवार के रूप में देखने की शिक्षा देती है। यही भाव हममें प्रकृति के प्रति एकात्मता का भाव विकसित करता है। आज जब पूरी दुनियाँ जलवायु परिवर्तन की चुनौती से जूझ रही है, तब सनातन सँस्कृति की यह सोच और व्यवहार मानवता के लिए एक प्रेरणा बन सकता है।

यह अध्ययन पर्यावरण संकट और जलवायु परिवर्तन के खतरों के दृष्टिगत बहुत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन से न सिर्फ सनातन सँस्कृति और पर्यावरण के संबंधों का पता चलता है, वहीं यह बात भी साबित होती है कि दशकों पहले कामकाज के सिलसिले में विदेशों में बस गए हिंदू आज भी अपनी सँस्कृति को आत्मसात किए हुए हैं। हिंदू सनातन धर्म में पर्यावरण केवल आध्यात्मिकता या पूजा–पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण सृष्टि के प्रति एक गहरी जागरूकता और सम्मान की भावना से ओत–प्रोत है। हमारी सँस्कृति में प्रकृति और जीव–जंतुओं को पूजनीय मानते हुए उनके संरक्षण पर जोर दिया गया है। इससे हिंदू धर्म में पर्यावरण संरक्षण केवल नैतिक दायित्व नहीं है, बल्कि धार्मिक आस्था और दैनिक जीवन का अभिन्न अंग भी है।

हमारे पुरखों को पर्यावरण से कितना प्रेम था, इसका पता उनके द्वारा स्थापित मान्यताओं से चलता है। सनातन धर्म में यह मान्यता है कि संपूर्ण सृष्टि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश पंचतत्वों से बनी है। इन पंचतत्वों को संतुलित रखना जीवन का मूल उद्देश्य है। इसी कारण पर्यावरण की

शुद्धता और संतुलन बनाए रखना हिंदू दर्शन का प्रमुख भाग है। सनातन सँस्कृति में पग–पग पर पर्यावरण संरक्षण के उपाय किए गए हैं। भूमि पूजन, गोवर्धन पूजा के बहाने पृथ्वी पूजन की परंपरा अनायास थोड़े बन गई है। नदियों को देवी मानकर पूजने के पीछे गंगा, यमुना, नर्मदा, कृष्णा आदि तमाम नदियों की पवित्रता को बनाए रखने की मंशा ही तो है। हवन और यज्ञ में प्राकृतिक जड़ी–बूटियों का उपयोग करने के पीछे पर्यावरण को शुद्ध करने की भावना निहित है।

हमारे पुरखों ने योग और प्राणायाम के जरिए शुद्ध वायु का महत्व कितने वैज्ञानिक ढ़ंग से समझाया है। पुरखों ने आकाश को अनंत ऊर्जा का स्रोत माना एवं ध्यान और साधना के माध्यम से इसका संतुलन बनाए रखने का संदेश दिया, तो इसके पीछे भी तो प्रकृति के प्रति श्रद्धा भाव ही है। पेड़ों और वनस्पतियों को देवतुल्य मानकर उनकी पूजा के पीछे उनके संरक्षण की भावना ही तो है। हमारे पुरखों ने सदियों पहले जिस तुलसी को माँ लक्ष्मी का स्वरूप मानकर हर घर में लगाने की परंपरा शुरू की, उसके औषधीय गुणों को आज वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं। हमारे यहाँ प्राचीन काल में ही ऋषि–मुनि आश्रमों में वन लगाने को प्राथमिकता दी गई और आज भी मंदिरों और आश्रमों में वृक्षारोपण को पवित्र कार्य के रूप में करके उसका अनुसरण किया जा रहा है। हमारे देश में पर्यावरण संरक्षण हमारी शिक्षा पद्धति का प्राचीन काल से ही भाग रहा है। हमारे ऋषि–मुनि पर्यावरण शुद्ध रखने के लिए हवन–यज्ञ करते थे। इससे वातावरण को साफ एवं समय पर वर्षा में मदद मिलती थी। आधुनिक काल में भी ऐसे उदाहरण हैं, जब हवन–यज्ञ के बाद वर्षा होते देखी गई है। वर्तमान समय में तो प्राचीन परंपराओं का अनुसरण करने की अधिक आवश्यकता है क्योंकि नदियों का जल कम एवं प्रदूषित हो रहा है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं। समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है और विश्व के कई तटीय शहरों के डूब जाने का अंदेशा है। प्राचीन गुरुकुलों में पर्यावरण संरक्षण पर जोर दिया जाता था, तो वर्तमान समय में भी कॉलेजों–विश्वविद्यालयों में पर्यावरण संरक्षण पर शोध एवं अध्ययन, अधिकाधिक पेड़ लगाने और पर्यावरण अनुकूलता के लिए स्वच्छ वातावरण को प्राथमिकता दी जा रही है। हमारी मान्यता है कि शुद्ध एवं साफ वातावरण में लक्ष्मी का वास होता है और इससे समृद्धि आती है, हमारे इस विचार को विदेशों में अपनाया गया है। विभिन्न देशों में विश्वविद्यालयों के लंबे–चौड़े, खुले परिसर एवं वहाँ सघन हरियाली इसका प्रमाण है।

सनातन सँस्कृति में जैव विविधता को बनाए रखने के लिए जहाँ गाय को माता का दर्जा दिया गया है, वहीं नाग पंचमी पर सांपों की पूजा कर उनके महत्व को भी स्वीकारा गया है। गंगा दशहरा और कार्तिक स्नान जैसे त्योहारों के माध्यम से जल शुद्धता बनाए रखने का संदेश दिया गया है। अर्द्धकुंभ, कुंभ और महाकुंभ में नदियों की सफाई और उनकी महत्ता पर बल दिया गया है।

अध्ययन की रिपोर्ट में कहा गया है कि हिंदू धर्म कर्म पर आधारित है। इसमें मान्यता है कि इस जीवन में हम जो करते हैं, उसका असर अगले जन्म पर पड़ता है। अच्छे कर्म से बुरे कर्म मिटते हैं और अगला जन्म बेहतर होता है। इसीलिए पर्यावरण के प्रति दायित्व बोध बना हुआ है। हमारे युवा इसमें सबसे अग्रणी हैं, 18–24 वर्ष के 46 प्रतिशत धार्मिक युवा ईश्वर को पर्यावरणविद् के रूप में देखते हैं।

आज समूची दुनियाँ जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और पारिस्थितिकी असंतुलन की समस्याओं से जूझ रही है। इन समस्याओं का समाधान भारतीय सनातन सँस्कृति में खोजा जा सकता है। हमारी महान परंपराएँ समूची दुनियाँ में पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शक बन सकती हैं। हिंदू धर्म में पुराने कपड़ों और सामान का पुनः उपयोग करने की परंपरा रीसाइक्लिंग और अपशिष्ट प्रबंधन का प्राचीन रूप नहीं तो क्या है? हमारे यहाँ शाकाहार को बढ़ावा इसलिए दिया गया, क्योंकि हमारे पूर्वज जानते थे कि शाकाहार को बढ़ावा देने से कार्बन उत्सर्जन कम होता है और पर्यावरणीय संतुलन बना रहता है। हमारी सँस्कृति में छठ पूजा में जल और सूर्य का महत्व, संक्रांति में तिल और गुड़ तथा होली में प्राकृतिक रंग जैव विविधता को संरक्षण के परिचायक हैं।

हिंदू सनातन धर्म और पर्यावरण संरक्षण की भावना परस्पर गहराई से जुड़े हुए हैं। यह जुड़ाव केवल धार्मिक नियमों का पालन करने तक सीमित नहीं है, बल्कि एक संपूर्ण जीवन शैली है, जो प्रकृति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन, सम्मान और संरक्षण को प्राथमिकता देती है। अगर आज पूरी दुनियाँ इन सिद्धांतों को अपना ले, तो न सिर्फ पर्यावरण संकट को कम किया जा सकता है, बल्कि जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों से भी निपटा जा सकता है। प्रकृति की रक्षा करना केवल हमारा धर्म नहीं, बल्कि हमारा नैतिक उत्तरदायित्व भी है।

profmcguptadelhi@gmail.com

नागरिक का कर्तव्य

श्रीमती अरुणा सूद

हर नागरिक का जीवन केवल उसकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं तक सीमित नहीं होता, बल्कि वह परिवार, समाज, देश और संपूर्ण पर्यावरण से गहराई से जुड़ा होता है। एक सुसँस्कृत और जागरूक नागरिक अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करके न केवल समाज और राष्ट्र की प्रगति में योगदान देता है, बल्कि अपनी साँस्कृतिक विरासत को भी संरक्षित करता है।

सनातन धर्म के अनुसार, कर्तव्य का मार्ग ही सच्चा धर्म है। भारतीय संस्कृति में कर्तव्य को अत्यंत महत्व दिया गया है, क्योंकि यही समाज और राष्ट्र की आधारशिला है। यदि प्रत्येक नागरिक अपने उत्तरदायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करे, तो राष्ट्र स्वतः ही समृद्धि और विकास की ओर अग्रसर होगा। एक उत्तम नागरिक वही होता है, जो न केवल अपने अधिकारों के प्रति सजग हो, बल्कि अपने कर्तव्यों को भी पूर्ण निष्ठा से निभाए। नागरिक कर्तव्यों के विभिन्न पहलुओं पर विचार करके हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि इन्हें अपने जीवन में कैसे आत्मसात कर सकते हैं।

1. पर्यावरण के प्रति कर्तव्य –

प्रकृति हमें जीवन के लिए आवश्यक सभी संसाधन प्रदान करती है, अतः पर्यावरण संरक्षण हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी है। इसके लिए वृक्षारोपण को बढ़ावा दें और वनों की अंधाधुंध कटाई रोकने में योगदान करें। जल. वायु और भूमि प्रदूषण को रोकने के लिए स्वच्छता बनाए रखें। प्लास्टिक के उपयोग को सीमित करें और कचरे का उचित निपटान करें। ऊर्जा संरक्षण हेतु बिजली और पानी की बर्बादी रोकें। सनातन धर्म में प्रकृति को देवतुल्य माना गया है। हमारे शास्त्रों में नदियाँ, पर्वत और वनों की पूजा की परंपरा रही है। इसीलिए, हमें पर्यावरण की रक्षा को धर्म मानकर व्यवहार करना चाहिए।

2. परिवार के प्रति कर्तव्य –

परिवार समाज की नींव है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार में सद्भाव, नैतिकता और प्रेम को बढ़ावा दे, तो संपूर्ण समाज संतुलित और सशक्त बनेगा। नागरिकों को परिवार में आपसी प्रेम, सम्मान और सहयोग बनाए रखना चाहिए। बच्चों को उत्तम शिक्षा और संस्कार प्रदान करने चाहिए। बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिए और उनकी देखभाल करनी चाहिए, अपने आचरण से बच्चों के सामने उदाहरण पेश करना चाहिए। पारिवारिक समस्याओं को धैर्य और समझदारी से सुलझाना चाहिए। संस्कृत में कहा गया है... "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" अर्थात, यह धरती हमारी माता है और हम इसके संतान हैं। अतः परिवार और समाज के प्रति दायित्व का निर्वहन हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है।

3. देश के प्रति कर्तव्य

राष्ट्र के प्रति दायित्व सर्वोपरि है। प्रत्येक नागरिक को अपने देश की प्रगति और सुरक्षा में योगदान देना चाहिए। इसके लिए संविधान और कानूनों का पालन करें। अपने कर्तव्यों को ईमानदारी और निष्ठा से निभाएँ। भ्रष्टाचार से दूर रहें और पारदर्शिता को बढ़ावा दें। राष्ट्रीय एकता और भाईचारे को मजबूत करें। मतदान के अधिकार का प्रयोग करें और दूसरों को भी जागरूक करें। समाज में शिक्षित और जागरूक वातावरण बनाने में योगदान दें। भगवद गीता में श्रीकृष्ण

ने कहा है... "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन", अर्थात् कर्म करना हमारा अधिकार है, फल की चिंता किए बिना हमें अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए।

4. समाज के प्रति कर्तव्य

समाज के बिना व्यक्ति अधूरा है। इसलिए, हर नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह समाज की भलाई के लिए कार्य करे। इसके लिए गरीब और जरूरतमंदों की सहायता करें। शिक्षा, स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधी जागरुकता फैलाएँ। जाति, धर्म और लिंग के आधार पर भेदभाव न करें। महिला और बच्चों के अधिकारों की रक्षा करें। समाज में फैले अपराध और बुरी प्रवृत्तियों को रोकने के लिए सतर्क रहें। हमारी सँस्कृति 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को बढ़ावा देती है, जिसका अर्थ है कि संपूर्ण विश्व एक परिवार है। अतः हमें समाज में सौहार्द और सहयोग को प्राथमिकता देनी चाहिए।

5. स्वयं के प्रति कर्तव्य

व्यक्ति का पहला कर्तव्य स्वयं के प्रति होता है, क्योंकि जब तक वह स्वयं को सशक्त नहीं करेगा, तब तक समाज और राष्ट्र के लिए कुछ नहीं कर पाएगा। अतः शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें। निरंतर सीखने और आत्मविकास की प्रवृत्ति विकसित करें। अनुशासन, ईमानदारी और परिश्रम को जीवन का आधार बनाएँ। आत्मविश्लेषण करें और अपनी कमियों को सुधारें। नशे और बुरी आदतों से दूर रहें।

सनातन धर्म आत्मशुद्धि और आत्मसंयम पर बल देता है। ध्यान, योग और साधना द्वारा हम अपने भीतर सकारात्मक ऊर्जा विकसित कर सकते हैं और समाज को प्रेरित कर सकते हैं। हर नागरिक का यह दायित्व है कि वह पर्यावरण, परिवार, समाज, देश और स्वयं के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करे। यदि हर व्यक्ति अपने उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए संकल्पबद्ध हो जाए, तो हमारा देश एक आदर्श राष्ट्र बन सकता है।

आज के समय में कई लोग धर्म और कर्तव्य से भटक गए हैं। इसे सुधारने के लिए आत्म–अनुशासन और नैतिक मूल्यों को अपनाना आवश्यक है। आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलते हुए हमें ध्यान, योग और सेवा को अपनाना चाहिए। अहंकार और लोभ का त्याग कर सादगी और करुणा का मार्ग अपनाना चाहिए। सनातन धर्म हमें सिखाता है कि कर्तव्य पालन ही सबसे बड़ा धर्म है। यदि प्रत्येक नागरिक सत्य, धर्म, सेवा, स्वच्छता और राष्ट्रप्रेम को अपनाए, तो समाज और देश स्वर्ण युग की ओर बढ़ सकते हैं। हमें अपने जीवन को धर्ममय बनाना होगा और अपने कार्यों से राष्ट्र को गौरवान्वित करना होगा। यही एक सच्चे नागरिक का कर्तव्य है।

सरकारी संपत्तियों पर अतिक्रमण कर बनाई गई मजारों को ध्वस्त करने के सरकारी अभियान के समर्थन में विश्व हिन्दू परिषद

विहिप, बजरंग दल, हरिद्वार के कार्यकर्ताओं ने नगर मजिस्ट्रेट कार्यालय पर विशाल धरना– प्रदर्शन कर नारेबाजी करते हुए नगर मजिस्ट्रेट, हरिद्वार किरण चौहान को उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन सौंपा। प्रेषित ज्ञापन में विश्व हिन्दू परिषद ने कहा कि देवभूमि के नाम से देश–दुनियाँ में विख्यात उत्तराखंड एक सीमावर्ती राज्य है। उत्तराखण्ड राज्य में पिछले कुछ सालों से सार्वजनिक, सरकारी एवं संवेदनशील स्थानों पर अवैध मजारें बनाने और फिर उन्हें वक्फ बोर्ड में पंजीकृत कराने का सुनियोजित षड्यंत्र हो रहा है। ऐतिहासिक, धार्मिक मठ और मंदिरों की भूमि देवभूमि उत्तराखंड में सिर्फ मठ– मंदिर ही नहीं हैं, वरन यहाँ पाँच हजार से अधिक की सँख्या में मजार, मस्जिद, मदरसे, कब्रिस्तान भी संचालित हो रहे हैं। विगत कुछ वर्षों में देवभूमि उत्तराखण्ड में तेजी के साथ मस्जिद, मदरसे, मजारों का जाल फैला है और इनके माध्यम से बाहरी मुसलमानों की घुसपैठ भी राज्य में बढ़ी है। सन 2011 के जनसँख्या आंकड़ों के अनुसार तब उत्तराखंड राज्य में मुस्लिम आबादी 14 प्रतिशत के आसपास थी, जो वर्तमान समय में देहरादून, उधमसिंह नगर, हरिद्वार, नैनीताल आदि जिलों में बढ़कर 30 प्रतिशत से भी ऊपर जा चुकी है।

उत्तराखण्ड के तराई और भाबर क्षेत्र के जंगलों में पिछले 15–20 वर्षों में अवैध मजारों की सँख्या तेजी से बढ़ी है। उत्तराखण्ड राज्य के वन क्षेत्रों में लगभग 400 मजहबी संरचनाओं का विषय संज्ञान में आया है। जिम कार्बेट पार्क एवं राजाजी टाइगर रिजर्व में लगभग 40 मजारें अस्तित्व में होने की रिपोर्ट सामने आई है। रानीखेत आर्मी स्कूल के पीछे भी अवैध मजार है। इन संवेदनशील स्थानों पर अक्सर सेना के युद्धाभ्यास और जवानों का प्रशिक्षण भी होता है। अनेक मजारें कैंट एरिया के जंगल में भी दिखाई पड़ रही हैं, जहाँ बाहरी लोगों के आने–जाने में कोई भी रोकटोक नहीं है।

वीरभूमि, देवभूमि उत्तराखण्ड में लैंड जिहाद का ज्वलंत उदाहरण मस्जिद, कब्रिस्तान, मदरसे, मजारों का अतिक्रमण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उत्तराखण्ड वीरों, पराक्रमियों, साधु–संतों, मठ–मंदिरों, ऋषि–मुनियों की भूमि है, हम इसे मजारों का प्रदेश नहीं बनने देंगे। देवभूमि उत्तराखण्ड की डेमोग्राफी को बदलने का यह एक सुनियोजित षडयंत्र है। विहिप उत्तराखण्ड राज्य में मस्जिद, कब्रिस्तान, मदरसे और मजारों के माध्यम से स्कूलों, वनों, सरकारी संपत्तियों को कब्जाने और रास्तों को बाधित करने का विरोध करती है। विहिप निजी, सार्वजनिक एवं सरकारी संपत्तियों पर अतिक्रमण कर बनाई गई इन अवैध मजहबी संरचनाओं को हटाने के सरकार के अभियान का पुरजोर समर्थन करती है। उत्तराखण्ड सरकार को बिना किसी दबाव के इस दिशा में कार्य करते रहना चाहिए।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

डॉ. आनंद मोहन
सहयोगी - डॉ. अग्रताबेन वघेल, आलोक मोहन

अबीर और गुलाल
हिंदू परंपराओं में उनका महत्व

रंगों का त्योहार होली हिंदू सँस्कृति का एक अभिन्न अंग है और पूरे भारत में बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है। त्योहार के केंद्र में दो प्रकार के रंग पाउडर हैं : अबीर और गुलाल। जबकि वे प्रायः एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किए जाते हैं, उनकी विशिष्ट विशेषताएँ और ऐतिहासिक महत्व हैं। हिंदू धार्मिक परंपराओं में उनकी भूमिका से परे, इन रंग पाउडर के औषधीय प्रभाव भी हैं। यह लेख अबीर और गुलाल के धार्मिक महत्व, उनकी उत्पत्ति, रचनाओं और स्वास्थ्य, विज्ञान और पर्यावरण पर उनके प्रभाव के बारे में बताता है।

हिंदू धर्म में अबीर और गुलाल का धार्मिक महत्व – होली, जिसे रंगों के त्योहार के रूप में भी जाना जाता है, वसंत के आगमन और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार रंगीन पाउडर का उपयोग करने की परंपरा राधा और कृष्ण के दिव्य प्रेम कहानी से उपजी है। भगवान कृष्ण, जिनका रंग सांवला था, राधा की गोरी त्वचा से ईर्ष्या करते थे और खेल–खेल में उनके चेहरे पर रंग लगाते थे। रंग को धुंधला करने का यह कार्य एक परंपरा बन गया, जो प्रेम, एकता और सामाजिक बाधाओं को तोड़ने का प्रतीक है। बंगाल में, होली को डोल जात्रा या डोल पूर्णिमा के रूप में जाना जाता है, जहाँ राधा और कृष्ण को पालकी पर रखा जाता है और मंदिरों के चारों ओर परिक्रमा की जाती है। भक्त उन्हें अबीर रंग के एक बारीक, सुगंधित पाउडर के साथ स्नान करवाते हैं। यह अनुष्ठान भक्ति, समर्पण और आध्यात्मिक संबंध का प्रतीक है।

मंदिर अनुष्ठान और प्रसाद – होली के अलावा, अबीर और गुलाल का व्यापक रूप से हिंदू धार्मिक समारोहों और मंदिर अनुष्ठानों में उपयोग किया जाता है। इस पाउडर का उपयोग अक्सर मूर्तियों को सजाने, भक्तों का अभिषेक करने और शादियों और पूजा जैसे शुभ अवसरों को चिंहित करने के लिए किया जाता है। भगवान विष्णु, कृष्ण और देवी दुर्गा को समर्पित मंदिरों में, पुजारी दिव्य आशीर्वाद के संकेत के रूप में अबीर छिड़कते हैं।

विवाह और अंतिम संस्कार – कुछ हिंदू परंपराओं में, अबीर एवम् गुलाल शादी और अंतिम सँस्कार दोनों अनुष्ठानों में भूमिका निभाते हैं। शादियों के दौरान, दूल्हा और दुल्हन एकता और खुशी के संकेत के रूप में एक–दूसरे के चेहरे पर अबीर और गुलाल लगाते हैं। इसके विपरीत कुछ समुदाय मृतक को सम्मानित करने के लिए अंतिम संस्कार समारोहों में गुलाल का उपयोग करते हैं, खासकर अगर व्यक्ति विवाहित था।

अबीर और गुलाल की संरचना और पारंपरिक तैयारी – ऐतिहासिक रूप से, अबीर और गुलाल प्राकृतिक अवयवों का उपयोग करके तैयार किए गए थे, जो न केवल त्वचा के लिए सुरक्षित थे, बल्कि औषधीय गुण भी रखते थे। अबीर पारंपरिक रूप से चावल पाउडर, प्राकृतिक फूलों के अर्क और चंदन से बनाया जाता है, जो इसे एक नरम बनावट और हल्की खुशबू देता है। गुलाल फूलों के अर्क, हल्दी और आरारोट पाउडर से बनाया जाता है, जो इसे बोल्ड रंग और रोगाणुरोधी गुण प्रदान करता है। सिंथेटिक रंगों के आगमन के साथ, पारंपरिक प्रक्रिया को रासायनिक योगों द्वारा बदल दिया गया

है, जिससे त्वचा एलर्जी और पर्यावरण प्रदूषण के बारे में चिंता बढ़ गई है।

अबीर, गुलाल का औषधीय और आयुर्वेदिक प्रभाव – आयुर्वेद में पारंपरिक अबीर और गुलाल में उपयोग की जाने वाली सामग्री विभिन्न स्वास्थ्य लाभ प्रदान करती है। हर्बल गुलाल में एक प्रमुख घटक, हल्दी में एंटीसेप्टिक, सूजनरोधी और रोगाणुरोधी गुण होते हैं, जो त्वचा के संक्रमण को रोकते हैं और त्वचा के स्वास्थ्य को बढ़ाते हैं। अबीर में चंदन पाया जाता है, चंदन में शीतलन प्रभाव होता है, तनाव कम करता है और त्वचा की जलन को शांत करता है। प्राकृतिक गुलाल में नीले रंगों के लिए प्रयुक्त, इंडिगो में एंटीफंगल गुण होते हैं और त्वचा रोगों के इलाज में सहायता करते हैं। लाल रंग के अबीर में अक्सर चुकंदर होता है, जिसमें एंटीऑक्सिडेंट होते हैं, जो त्वचा कोशिकाओं को फिर से जीवंत करते हैं। कार्बनिक गुलाल में एक आधार घटक, आरारोट अतिरिक्त तेल को अवशोषित करता है और मुँहासे को रोकता है।

पर्यावरणीय प्रभाव और प्रदूषण संबंधी चिंताएँ – सिंथेटिक होली के रंगों के उदय के साथ, कई पर्यावरणीय मुद्दे सामने आए हैं : रासायनिक रंग जल निकायों को दूषित करते हैं, जलीय जीवन को प्रभावित करते हैं। सिंथेटिक गुलाल में भारी धातुएँ मिट्टी की उर्वरता को कम करती हैं। रासायनिक रंगों से श्वसन संबंधी समस्याएँ, त्वचा की एलर्जी और आँखों में संक्रमण होता है। हाल के प्रयास पर्यावरण के अनुकूल, हर्बल रंगों को बढ़ावा देते हैं, जो प्रदूषण और स्वास्थ्य जोखिमों को रोकते हैं। रंग चिकित्सा से पता चलता है कि चमकीले रंग मूड और भावनाओं को प्रभावित करते हैं। होली में गुलाल का उपयोग खुशी, उत्साह और एकजुटता की भावना को उत्तेजित करता है, तनाव को कम करता है और सामाजिक बंधन को बढ़ाता है। अबीर के पेस्टल शेड्स एक शांत प्रभाव पैदा करते हैं, अनुष्ठानों में आध्यात्मिक शांति को बढ़ावा देते हैं।

सुरक्षित और प्राकृतिक अबीर और गुलाल चुनना – बढ़ती जागरूकता के साथ, लोग जैविक और हर्बल अबीर और गुलाल की ओर बढ़ रहे हैं। यहाँ बताया गया है कि आप सुरक्षा कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं : हल्दी, चंदन, चुकंदर या फूलों के अर्क से बने पाउडर का चयन करें। सीसा और पारा जैसी भारी धातुओं वाले रंगों से दूर रहें। ऐसे ब्रांड चुनें, जो प्रमाणित ऑर्गेनिक कलर पाउडर प्रदान करते हैं। यदि अनिश्चित है, तो इसे पूरी तरह से लागू करने से पहले एक छोटे से त्वचा क्षेत्र पर पाउडर का परीक्षण करें।

उपसंहार – अबीर और गुलाल हिंदू संस्कृति में गहरा धार्मिक, औषधीय और वैज्ञानिक महत्व रखते हैं। देवताओं को सजाने और प्यार का जश्न मनाने में, ये पाउडर भारतीय परंपराओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जैसे–जैसे पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के बारे में जागरूकता बढ़ती है, प्राकृतिक और जैविक रंगों के उपयोग को पुनर्जीवित करना आवश्यक है। पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों का चयन करके, हम अपनी समृद्ध साँस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए होली और अन्य त्योहारों को जिम्मेदारी से मना सकते हैं। आइए हम अपनी त्वचा, स्वास्थ्य और ग्रह के लिए सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए अबीर और गुलाल की जीवंत परंपरा को अपनाएँ। सचेत प्रयासों से, हम होली की भावना को जीवित रख सकते हैं–सबसे स्थायी तरीके से प्यार, खुशी और सद्भाव का जश्न मना सकते हैं।

नागपुर में अफवाह फैलाने व हिंसा करने वाले जिहादियों के विरुद्ध हो कठोर कार्यवाई तथा औरंगजेब की कब्र के स्थान पर बने पूज्य धना जी, संता जी, छत्रपति राजाराम महाराज जी का स्मारक

नई दिल्ली, 18 मार्च, 2025। विश्व हिंदू परिषद ने मांग की है कि नागपुर में अफवाह फैलाकर, हिंसा व आगजनी करने वाले जिहादियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाई हो तथा औरंगजेब की कब्र के स्थान पर पूज्य धनाजी जाधव, संताजी घोरपड़े, छत्रपति राजाराम महाराज जी का स्मारक बने।

विहिप के केंद्रीय संगठन महामंत्री श्री मिलिंद परांडे ने घटना की तीव्र भर्त्सना करते हुए कहा है कि महाराष्ट्र के नागपुर में कल रात्रि को जो आगजनी और हमले की घटनाएँ मुस्लिम समाज के एक वर्ग द्वारा की गईं, वे पूर्णतः निंदनीय है। उन्होंने कहा कि हमारे युवा विभाग बजरंगदल के कार्यकर्ताओं के घरों पर हमले किए गए, उन्होंने हिंदू समाज के अनेक घरों को निशाना बनाया और महिलाओं को भी नहीं छोड़ा गया। विश्व हिंदू परिषद इस सब की घोर शब्दों में निंदा करता है। यह बेहद शर्मनाक है कि एक तो यह झूठ फैलाया गया कि हिंदू समाज ने आयतें जलाई हैं और दूसरी ओर हिंसा भड़काने का कुत्सित प्रयास हुआ। ऐसे सभी समाज कंटक जिहादी उत्पातियों के विरुद्ध कड़ी से कड़ी कार्यवाई करनी चाहिए।

विहिप महामंत्री ने यह भी कहा कि छत्रपति संभाजी महाराज नगर में जो औरंगजेब की कब्र है, उसका महिमा मंडन बंद कर, उसमें कोई सुधार करने का विषय भी नहीं सोचना चाहिए। अपितु उसकी जगह पर वहाँ औरंगजेब को जिन्होंने पराजित किया, ऐसे श्री धनाजी जाधव और श्री संताजी घोरपड़े

तथा साथ में ही छत्रपति श्री राजाराम जी महाराज का एक विजय स्मारक बनाना चाहिए। जहाँ मराठों के साम्राज्य में औरंगजेब को पराजित करने का एक विजय स्तंभ बने, वही मांग विश्व हिंदू परिषद कर रही है और इसलिए ऐसे हिंसा में लगे हुए लोगों के विरुद्ध तुरंत कार्यवाही करके कठोर से कठोर रीति से इनका दमन करना चाहिए।

स्लीपिंग पिल नहीं इन आयुर्वेदिक हर्ब्स को करें डाइट में शामिल, बिस्तर पर लेटते ही झट से आ जाएगी नींद

अगर पूरी रात आप करवट बदलते रहते हैं और घड़ी की ओर देखते–देखते आपकी पूरी रात कट जाती है, तो यह सही नहीं है। दिन भर काम करने के बाद रात को 7–8 घंटे की चैन की नींद बहुत जरूरी है। अगर आपको नींद आने में मुश्किल होती है, तो नींद की गोली नहीं, बल्कि इन आयुर्वेदिक हर्ब्स को डाइट में शामिल करें।

क्या आपकी नींद बार–बार खुलती रहती है ?

अगर ऐसा है, तो इसका आपकी सेहत पर असर पड़ सकता है। सेहतमंद रहने के लिए, अच्छी नींद भी बहुत जरूरी है। नींद पूरी न होने के कारण से स्वास्थ्य पर बुरा असर होता है। इसके कारण आपका पाचन खराब हो सकता है और मानसिक स्वास्थ अवस्था पर भी असर होता है। स्ट्रेस, हार्मोनल इंबैलेंस और भी कई कारण, नींद न आने में कठिनाई हो सकती है। अगर आपको नींद आने में कठिनाई होती है, तो नींद की गोली नहीं, बल्कि इन आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियों को आहार में शामिल करें। हालांकि अगर लंबे समय से नींद आने में परेशानी हो रही है, तो डॉक्टर से इस बारे में बात जरूर करें। यहाँ हम आपको 2 आयुर्वेदिक औषधियों के बारे में बता रहे हैं, जो अच्छी नींद लाने में सहायता कर सकते हैं।

अश्वगंधा

- अगर आपको नींद आने में कठिनाई होती है, तो अच्छी नींद लाने में अश्वगंधा सहायक है। विशेषज्ञ का कहना है कि अश्वगंधा का सेवन करने से नींद जल्दी आती है और नींद बार–बार टूटती भी नहीं है।
- यह एक प्राकृतिक एडाप्टोजेन है, जो शरीर और दिमाग को आराम देता है।
- अश्वगंधा, तनाव और चिंता को कम करके, अच्छी नींद लाने में सहायता करता है।
- अगर आपको नींद आने में कठिनाई होती है या गहरी नींद नहीं आती है, तो अश्वगंधा आपके लिए लाभदायक हो सकता है। यह डिप्रेशन के लक्षणों को कम करने में सहायता कर सकता है।
- यह स्ट्रेस हार्मोन कोर्टिसोल को कम करता है, जो नींद न आने का मुख्य कारण है। अश्वगंधा, दिमाग को शांत करके, नर्वस सिस्टम को रिलैक्स करता है।
- विशेषज्ञों का कहना है कि आपको 2–3 ग्राम से ज्यादा अश्वगंधा का सेवन नहीं करना चाहिए और 3 महीने से ज्यादा इसका प्रयोग भी सही नहीं है।
- इसका प्रयोग आपको किस तरह और कितनी मात्रा में करना है, इस बारे में चिकित्सक की सलाह जरूर लें।

ब्राह्मी

- आयुर्वेद में ब्राह्मी को ब्रेन टॉनिक माना जाता है। यह दिमाग के लिए तो अच्छी है ही लेकिन, साथ ही यह नींद लाने में भी सहायता कर सकती है।
- सोने से पहले ब्राह्मी का सेवन करने से तनाव और चिंता कम होती है और नींद आने में सहायक होती है।
- ब्राह्मी, दिमाग को शांत करने में भी मदद करती है। यह कोर्टिसोल के स्तर को कम करती है और मूड को बेहतर बनाती है।
- इससे स्मरण शक्ति भी अच्छी होती है और दिमाग शांत होता है।
- ब्राह्मी का सेवन करने से मन शांत होता है।
- अगर आपको नींद आने में कठिनाई होती है, तो सोने से पहले दूध के साथ ब्राह्मी का सेवन करें। हालांकि इसकी मात्रा और खाने के तरीके के बारे में विशेषज्ञ की सलाह जरूर लें।

अच्छी नींद लाने में ये आयुर्वेदिक हर्ब्स आपकी सहायता कर सकते हैं। हालांकि, अगर आपको लंबे समय से नींद आने में मुश्किल हो रही है तो चिकित्सक की सलाह जरूर लें।

मेले भी नहीं होंगे

आदरणीय धर्मनारायण जी का 21 मार्च 2025 को महाप्रयाण हो गया।

युवा अवस्था में वह संघ के प्रचारक हुए। हिन्दू समाज की संगठित शक्ति द्वारा अपने राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाने का और इस काम के लिए जीवन न्यौछावर करने का पुण्य संकल्प अपनी अंतिम सांस तक निभाया।

राजस्थान में अनेक दायित्वों पर रहे, फिर महाकौशल प्रान्त के प्रांत प्रचारक हुए और उसके बाद विश्व हिन्दू परिषद में केंद्रीय मंत्री व अन्य दायित्वों को निभाते रहे।

धर्मनारयण जी की आवाज में एक स्वाभाविक गर्जन था। बड़ी से बड़ी सभा को वह सम्मोहित कर लेते थे। उपस्थित लोगों को जोश से भर देते थे।

धर्मनारायण जी ने गम्भीर अध्ययन किया। अनेक विषयों पर पुस्तकें लिखी। उन्होंने हिन्दू आचार संहिता का भी एक मसौदा तैयार करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने अपने जीवन और हर श्वास को हिंदुत्व के लिए समर्पित कर दिया।

आजादी के लिए बलिदान होने वाले लोग यह गाते थे कि "शहीदों की चिंताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशाँ होगा"। संघ के प्रचारक की तो यह भी आकांक्षा नहीं होती कि जाने के बाद कोई उन्हें याद रखे। नींव के पत्थर होकर जीतें है और नींव में ही विसर्जित हो जाते हैं। संकल्प होता है 'तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें'। अपने को अपने मन, बुद्धि, अहंकार को सम्पूर्ण रूप से संघ कार्य में विलीन करके अनाम होने के लिये वह प्रयाण कर जाते हैं। हमारी पीढ़ी जिसने उनको देखा है, वह स्मरण रखेगी और उसके बाद में उनके जैसे प्रचारकों और अन्य कर्मयोगियों का दर्शन हम अपने पवित्र 'भगवा ध्वज' में करेंगे और इन सबकी प्रेरणा से परम वैभव लाने के लिये सक्रिय रहेंगे।

श्री धर्मनारायण जी की स्मृति को विनम्र श्रद्धांजलि।

– आलोक कुमार,
अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद

वर्ष	केन्द्र	दायित्व
1959	ब्यावर, राजस्थान	नगर की दो–तीन शाखा विस्तारक
1960	डीडवाना, राजस्थान	सायं व प्रभात प्रचारक
1961–62	अलवर, राजस्थान	नगर प्रचारक
1962–64	दौसा, राजस्थान	तहसील प्रचारक, उप जिला प्रचारक
1965–66	जयपुर, राजस्थान	जिला प्रचारक
1966–69	भीलवाड़ा, राजस्थान	जिला प्रचारक
1970–76	अजमेर, राजस्थान	विभाग प्रचारक
1977–84	जोधपुर, राजस्थान	विभाग प्रचारक, संभाग प्रचारक
1984 जुलाई	जबलपुर	महाकौशल सह प्रांत प्रचारक
1988	जबलपुर	महाकौशल प्रांत प्रचारक
1994	भोपाल	क्षेत्रीय शारीरिक प्रमुख
1995 जुलाई	कलकत्ता	सह अंचल संगठन मंत्री, विश्व हिन्दू परिषद
1997	कलकत्ता	अंचल संगठन मंत्री, विहिप
2000–03	दिल्ली	केन्द्रीय मंत्री, विश्व हिन्दू परिषद (एकल अभियान)
2003–2017	दिल्ली	केन्द्रीय मंत्री, धर्मप्रसार सह प्रमुख
2017–2024	दिल्ली	केन्द्रीय मंत्री, धर्मप्रसार की केन्द्रीय टोली में
2024 से वर्तमान तक	दिल्ली	सदस्य केन्द्रीय प्रबन्ध समिति

मांसयुक्त रोजा इफ्तारी के सरेआम आयोजन के विरुद्ध बजरंग दल का आक्रोश प्रदर्शन

हरिद्वार, 8 मार्च 2025। विश्व हिन्दू परिषद के युवा संगठन बजरंग दल ने प्रतिष्ठित ऋषिकुल आयुर्वेदिक कॉलेज हरिद्वार के परिसर में मुस्लिम मतावलंबियों ने हरिद्वार बायलॉज का बेखौफ उल्लंघन करते हुए बिना किसी अनुमति के कट्टर मजहबी परंपराओं के अनुरुप मुसलमानों को एकत्र कर मांस युक्त रोजा इफ्तारी के सरेआम आयोजन के विरुद्ध विशाल धरना प्रदर्शन कर अपने आक्रोश का प्रदर्शन करते हुए आरोपियों एवं कॉलेज प्रबंधन के विरुद्ध पुलिस प्रशासन से कठोर कानूनी कार्यवाई की माँग की है।

बजरंग दल हरिद्वार के जिला संयोजक अमित मुल्तानिया ने बताया कि 7 मार्च 2025 को शाम लगभग 6.30 बजे ऋषिकुल आयुर्वेदिक कॉलेज के परिसर में कुछ मुस्लिम मतावलंबियों ने मांस युक्त रोजा इफ्तारी का सरेआम आयोजन किया। उक्त रोजा इफ्तारी में हिन्दू युवक एवं युवतियों को भी आमंत्रित किया गया था। जबकि सनातन नगरी हरिद्वार की अपनी मार्यदाएँ एवं मान्यताएँ तय हैं, जिन्हें 1916 में ब्रिटिश शासन काल में ही तय कर दिया गया था। हरिद्वार नगर पालिका का बायलॉज पंडित मदन मोहन मालवीय और ब्रिटिश सरकार के बीच हुए करार पर ही बनाया गया है, जो आज भी प्रासंगिक है। तीर्थनगरी हरिद्वार को लेकर जो मर्यादाएँ तय की गईं, उन्हें हरिद्वार नगर पालिका की नियमावली में शामिल किया गया और ये नियमवाली अथवा बायलॉज आज भी प्रभावी है। हरिद्वार पालिका के बायलॉज में गैर–हिन्दुओं के प्रवेश की व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। कनखल और मायापुर क्षेत्र में गैर–हिन्दुओं को रात्रि प्रवास पर रहने की भी अनुमति नहीं है।

बजरंग दल के प्रांत बलोपासना प्रमुख सौरभ चौहान ने बताया कि कट्टर जिहादी मुस्लिम मतावलंबियों द्वारा हर की पौड़ी के एकदम नजदीक ऋषिकुल आयुर्वेदिक कॉलेज के परिसर में रोजा इफ्तारी के आयोजन में हरिद्वार बायलॉज के संवैधानिक प्रावधानों का स्पष्ट उल्लंघन कर हिंदुओं को अपमानित और भयभीत करने, समाज में सांप्रदायिक सद्भावना को खत्म करने, भारतीय संविधान के प्रति दुर्भावना, हिंदुओं को चेतावनी देने एवं भावनाएँ भड़का कर दंगा कराने की दुर्भावना से उक्त कार्य किया है। जिहादी कट्टरपंथियों का यह सुनियोजित षडयंत्र की उक्त घटना से हिंदू समाज में आक्रोश होगा। यह घटना हरिद्वार का माहौल खराब करने और होली पर दंगा भड़काने की नीयत से की गई है।

नवीन तेश्वर प्रांत सुरक्षा प्रमुख बजरंग दल ने आरोप लगाया कि प्रधानाचार्य द्वारा ऋषिकुल आयुर्वेदिक कॉलेज को लव जिहाद और धर्मांतरण का केंद्र बनाया जा रहा है। यह घटना देवभूमि उत्तराखंड एवं हिंदू सँस्कृति को शर्मसार करने वाली है, इसे बजरंग दल बर्दाश्त नहीं करेगा।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

समरसता गोष्ठी एवं बैठक

दिनांक 15–16 मार्च 2025 को विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय मंत्री एवं अखिल भारतीय सामाजिक समरसता प्रमुख श्री देवजी भाई रावत का पंचमहल विभाग के लुनावाड़ा में प्रथम दिवस प्रवास हुआ।

समरसता गोष्ठी एवं बैठक में प्रथम दिवस पंचमहल विभाग के सभी प्रमुख पदाधिकारी, प्रांत मंत्री श्री राजेश भाई राणा, सह मंत्री एवं गोधरा विभाग पालक अधिकारी श्री प्रवीण भाई गजेरा, गुजरात क्षेत्र समरसता प्रमुख श्री रसेश भाई रावल, विभाग मंत्री श्री दिलीप भाई राणा, प्रांत समरसता प्रमुख श्री अजीत सिंह सोलंकी बैठक में उपस्थित रहे। प्रांत बैठक में आगामी प्रशिक्षण वर्ग की जानकारी तथा नए पदाधिकारी का जो चयन हुआ था, इसकी घोषणा की गई। श्री देव जी भाई रावत ने अखिल भारतीय बैठक के बाद जो विषय केंद्रीय स्तर पर लिए गए थे, उसका विस्तृत तथा विशेष रूप से संगठनात्मक दृढ़ीकरण के साथ –साथ पंच परिवर्तन, हिंदू समाज में जनसँख्या वृद्धि, तीन बालक हर परिवार में, युवा पीढ़ी नशे–ड्रग्स के षड्यंत्र में न फंसे, परिवार प्रबोधन का विषय तथा मुख्य रूप से विश्व हिंदू परिषद के कार्य दृढ़ीकरण तथा हिंदू समाज की एकता समरसता के लिए सामाजिक समरसता के विषय की आवश्यकता को लेकर प्रबोधन एवं समरसता के कार्य को किस प्रकार सावधानीपूर्वक करना इस विषय पर प्रेरक मार्गदर्शन दिया।

दुसरे दिन लीमखेड़ा, मौनी बाबा आश्रम में सामाजिक समरसता अभियान, दक्षिण गुजरात प्रांत की बैठक संपन्न हुई। संगठन दृढ़ीकरण, समरसता के चयनित जिलों में टोली बनाना, नव नियुक्ति, आगामी कार्यक्रम रामोत्सव, डॉक्टर भीमराव आंबेडकर जयंती तथा प्रयागराज महाकुंभ में सामाजिक समरसता अभियान की अखिल भारतीय बैठक में हुई चर्चा की जानकारी एवं आगामी कार्यक्रमों की योजना बनाई गई। इस बैठक में केन्द्रीय मंत्री श्री देवजी भाई रावत, प्रांत सह मंत्री तथा समरसता के पालक श्री ईमेश भाई पारिख, क्षेत्रीय समरसता प्रमुख श्री रसेश भाई रावल, प्रांत समरसता प्रमुख श्री अजित सिंह सोलंकी तथा समरसता के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

संघ के आयाम जनजाति सुरक्षा मंच के प्रांत संयोजक श्री बलवंत सिंह रावत जी, मौनी बाबा आश्रम के पुज्य संत श्री, लुणावाड़ा संघ कार्यालय में प्रचारक श्री, तथा दशनामी अखाड़ा के पूज्य संतों से प्रवास के समय मिलना हुआ तत्पश्चात भील परिवार एवं माछी परिवार में सहभोज हुआ।

प्रस्तुति : रसेश भाई रावल

अखिल भारतीय प्रमुख श्री देव जी भाई का दो दिवसीय प्रवास

8–9 मार्च 2025 को दो दिवसीय प्रवास में 8 मार्च को देव जी भाई रावत जी का प्रवास गुजरात की राजधानी गाँधीनगर में हुआ। गांधीनगर के ब्रह्म समाज, अनुसूचित जाति समाज, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के सरकारी कर्मचारियों से एवं गुरु ब्राह्मण समाज के अग्रणी के साथ मिलना हुआ एवं उनके परिवार के साथ सहभोज भी हुआ।

9 मार्च को गांधीनगर जिला के माणसा नगर के लाकरोड़ा गाँव में आर्य समाज द्वारा प्रेरित 'दर्शन योग धाम' आश्रम के परिसर में उत्तर गुजरात प्रांत, सामाजिक समरसता अभियान की बैठक संपन्न हुई। प्रांत टोली एवं प्रांत के प्रमुख 30 कार्यकर्ता उपस्थित रहे। आश्रम के आचार्य पूज्य प्रियेश जी, हरिश्वरानंद सरस्वती जी, महेंद्र मुनि जी, रवजी मुनि जी, केंद्रीय मंत्री एवं अखिल भारतीय समरसता प्रमुख श्री देव जी भाई रावत, विश्व हिंदू परिषद के उत्तर गुजरात प्रांत अध्यक्ष श्री हर्षद भाई गिलीटवाला, गुजरात क्षेत्र समरसता प्रमुख रसेश भाई रावल, उत्तर गुजरात प्रांत समरसता प्रमुख प्रवीण भाई भट्ट विशेष उपस्थित रहे।

उद्घाटन सत्र में आचार्य प्रियेश जी ने आशीर्वचन देते हुए विश्व हिंदू परिषद द्वारा सामाजिक समरसता के कार्य के लिए हो रहे प्रयास के संदर्भ में अपनी प्रशंसा व्यक्त की तथा श्री देव जी भाई रावत जी ने विश्व हिंदू परिषद सामाजिक समरसता अभियान द्वारा हो रहे प्रयास तथा केंद्रीय बैठक में लिए गए निर्णय के संदर्भ में वृत एवं सामाजिक समरसता के कार्य में जुड़े हुए कार्यकर्ताओं को किस प्रकार सावधानीपूर्वक समरसता के कार्य को करना है, उसका विस्तृत मार्गदर्शन दिया। 'परिवार मित्र' आगामी कार्यक्रम रामोत्सव एवं अंबेडकर जयंती के कार्यक्रम की योजना संपन्न कार्यक्रमों का वृत, चयनित जिलों में समरसता की टोली बनाना एवं संगठन दृढ़ीकरण के लिए विस्तृत चर्चा हुई। समापन सत्र में श्री हर्षद भाई गिलीटवाला जी ने सामाजिक समरसता संदर्भ में हो रहे कार्य एवं प्रयास के संदर्भ में सुंदर वक्तव्य रखा।

दर्शन योग धाम आश्रम की ओर से पधारे हुए सभी सामाजिक समरसता के कार्यकर्ताओं को पुस्तक एवं भगवा पटका भेंट में दिया गया तथा आश्रम में गुरुकुलीय शिक्षा–योग–यज्ञ के संदर्भ में हो रहे अनुसंधान की विस्तृत जानकारी दी।

मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्ति का अभियान

जनसँख्या असंतुलन, संस्कारों के क्षरण व नशा खोरी पर अंकुश हेतु युवाओं का आह्वान : मिलिंद परांडे

गुना। फाल्गुन शुक्ल नवमी, दशमी विक्रम संवत 2081 (8, 9 मार्च 2025) मध्यभारत प्रांत की प्रांत बैठक में पधारे केंद्रीय संगठन महामंत्री श्री मिलिंद परांडे जी ने कहा कि महाकुंभ मेला क्षेत्र प्रयागराज में 7, 8, 9 फरवरी को विश्व हिंदू परिषद की त्रि–दिवसीय बैठक सम्पन्न हुई, उसके पश्चात् प्रान्त बैठक का आयोजन गुना में हो रहा है। मंदिरों की सरकारी नियंत्रण से मुक्ति अभियान के विषय में उन्होंने बताया कि प्रथम चरण में विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता अन्य हिंदू संगठनों के साथ मिलकर प्रत्येक राज्य के मुख्यमंत्री को ज्ञापन देकर मांग करेंगे कि सरकारें हिंदू मंदिरों को वापस हिंदू समाज को सौंपे।

प्रत्येक राज्यों में आगामी विधानसभा सत्र के दौरान हमारे कार्यकर्ता विधानसभा और विधान परिषद के सदस्यों से मिलकर मंदिरों की मुक्ति हेतु आग्रह करेंगे एवं विहिप प्रतिनिधि जब मुख्यमंत्रियों को मिलने जाएंगे, तो वह अपने साथ उस राज्य के लिए इस संबंध में प्रस्तावित कानून का एक प्रारूप भी उनको सौपेंगे। अभियान के अगले चरण में प्रत्येक राज्य की राजधानी व महानगरों में वहाँ के समाज की सभाएँ कर इसके लिए व्यापक जन जागरण करेंगे।

केंद्रीय बेठक में पारित एक अन्य प्रस्ताव के विषय में बताते हुए श्री मिलिंद जी ने कहा कि हिंदुओं की घटती जनसँख्या दर, हिंदू परिवारों के विखंडन, लिव इन संबंध, युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति चिंतनीय है। इसमें देश की युवा पीढ़ी से कहा गया है कि ये समस्याएँ हिंदू समाज के लिए चुनौती बन गई हैं, जिनका जवाब उन्हें देना होगा।

पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि देश के सामने आने वाली हर चुनौती का हिंदू युवा शक्ति ने हमेशा जवाब दिया है। जनसँख्या असंतुलन हिंदू समाज के अस्तित्व के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। हिंदुओं की घटती हुई जनसँख्या बहुआयामी प्रभाव निर्माण करती है। हिंदू इस देश की पहचान है। अगर हिंदू घटा तो देश की पहचान और अस्तित्व के लिए भी संकट के बादल छा जायेंगे। इस स्थिति को रोकने के लिए हिंदू युवाओं को आगे बढ़ना होगा।

उन्होंने कहा कि देरी से विवाह और उज्जवल भविष्य की भ्रामक अवधारणाओं के मकड़ जाल के कारण भी हिंदू दंपतियों के बच्चे कम हो रहे हैं। संगठन महामंत्री जी ने बताया कि कई वैज्ञानिक अध्ययनों ने यह सिद्ध किया है कि यदि बच्चों का संपूर्ण विकास करना है, तो प्रत्येक परिवार में दो या तीन बच्चे अवश्य होने चाहिए।

प्रस्ताव में कहा गया है कि आज हिंदू सँस्कारों के अभाव में परिवार सँस्था पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। पश्चिमी भौतिकवाद का बढ़ता प्रभाव, अर्बन नक्सल षड्यंत्र व ग्लोबल कॉरपोरेट समूह मनोरंजन माध्यम व विज्ञापनों के द्वारा युवाओं को भ्रमित व सँस्कार विहीन बना रहा है। इसी कारण विवाहेत्तर संबंध और लिव इन संबंध भी बढ़ रहे हैं।

देश में बढ़ती हुई नशे की प्रवृत्ति पर भी विहिप ने चिंता व्यक्त की। 16 करोड़ से अधिक लोगों का नशे का आदी होना, इस समस्या की भीषणता को प्रकट करता है। विहिप ने युवाओं का आह्वान किया कि वे स्वयं भी नशे की आत्मघाती प्रवृत्ति से दूर रहें तथा अपने शिक्षण संस्थान, नगर व प्रांत को भी नशे से मुक्त बनाने के लिए वह बजरंग दल, दुर्गावाहिनी व अन्य संगठनों का सहयोग करें। साथ ही विहिप ने विभिन्न सरकारों से भी मांग की कि वे नशे के व्यापार में लिप्त माफियाओं और आतंकियों के गठजोड़ पर अंकुश लगे व कठोर कानून बनाकर इस पर पूर्ण रोक लगाने का प्रयास रहेगा।

बैठक में पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, नागरिक कर्तव्य, स्वदेशी व स्व का बोध जैसे पाँच परिवर्तनों को भी जनमानस के आचार व्यवहार और सँस्कारों का हिस्सा बनाने का संकल्प लिया गया। विश्व भर में हिंदू समाज से जुड़े अन्य ज्वलंत मुद्दों पर भी विस्तार से विचार विनिमय हुआ।

केन्द्र के इन महत्वपूर्ण विषयों एवं आगामी कार्यक्रम श्री राम उत्सव, सीता

नवमी, प्रशिक्षण वर्ग की योजना मध्यभारत प्रान्त की प्रांत बैठक 8, 9 मार्च 2025 मणिधारी गार्डन गुना में बनाई गई। इस बैठक में प्रांत की पत्रिका राष्ट्रबंधन के छः माही अंक विहिप के 60 वर्ष पूर्ण का विमोचन किया गया। प्रेस वार्ता का आयोजन भी किया गया, जिसमें गुना नगर के सम्मानीय पत्रकार बंधु उपस्थित रहे। साथ ही बैठक स्थान पर प्रदर्शनी एवं पुस्तक विक्रय केंद्र की व्यवस्था रही।

इस बैठक में घोषणा भी हुई, जिसमें प्रांत सह मंत्री श्री सुनील शर्मा अब क्षेत्र नैतिक शिक्षा प्रमुख, विभाग मंत्री विदिशा श्री मलखान सिंह जी अब प्रांत सह मंत्री, प्रान्त प्रचार प्रसार प्रमुख श्री जितेंद्र चौहान अब प्रान्त सह मंत्री, प्रान्त बजरंग दल संयोजक श्री सुशील सुडेले अब प्रांत के सह धर्म प्रसार प्रमुख, प्रांत सह संयोजक श्री अवधेश तिवारी अब प्रांत संयोजक बजरंग दल, विभाग मंत्री राजगढ़, श्री कपिल शर्मा अब प्रांत सह प्रचार प्रसार प्रमुख और श्री कमलेश प्रजापति अब प्रान्त सह धर्म प्रसार प्रमुख, कु. आकांक्षा दुबे को प्रान्त सह

संयोजिका दुर्गा वाहिनी का दायित्व दिया गया एवं अन्य विभाग, जिला स्तर की घोषणाएँ प्रान्त मंत्री श्री राजेश जैन के द्वारा की गई।

इस बैठक में केंद्रीय संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी परांडे, भोपाल क्षेत्र के क्षेत्र संगठन मंत्री श्री जितेंद्र जी पवार, क्षेत्र संयोजक बजरंग दल श्री विश्ववर्धन जी भट्ट, प्रांत अध्यक्ष श्री किसन लाल जी शर्मा, प्रांत मंत्री श्री राजेश जी जैन, प्रांत संगठन मंत्री श्री सुरेंद्र जी चौहान, प्रांत उपाध्यक्ष श्री पप्पू जी वर्मा, श्री नवल जी भदोरिया, प्रान्त सह मंत्री श्री गोपाल सोनी सहित सम्पूर्ण प्रान्त कार्यकारणी, सभी 8 विभाग के विभाग मंत्री, संयोजक, सभी 32 जिलों से जिला अध्यक्ष, मंत्री, बजरंग दल संयोजक, कोषाध्यक्ष सहित कुल 156 कार्यकर्ता बंधु/भगिनी उपस्थित रहे।

vhpmadhybharat@gmail.com

दुर्गावाहिनी-मातृशक्ति द्वारा विशाल मान वंदन यात्रा

आज दिनांक 9 मार्च 2025 को रानी दुर्गावती का 500 वाँ जन्मदिवस एवं अहिल्या बाई होलकर का 300वाँ पुण्यश्लोक दिवस मनाया गया। मुख्य वक्ता दुर्गावाहिनी क्षेत्र संयोजिका डा. शोभा रानी सिंह ने कहा कि दुर्गावाहिनी मातृशक्ति का ऐसा आयाम है, जो हिन्दू समाज की बहनों के बीच संगठन की सेवा, सुरक्षा, संस्कार के आदर्श वाक्य के साथ हिन्दू युवतियों को सशक्त बनाने और हिन्दू बेटियों की रक्षा करने के लिए संकल्पबद्ध व कार्यरत है।

उन्होंने कहा कि पुण्यश्लोक देवी अहिल्या बाई होल्कर की 300वें एवं रानी दुर्गावती के 500वें जन्म समारोह के अवसर पर हम सभी को दोनों वीरांगनाओ के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। अहिल्या बाई होल्कर का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर के चौड़ी गाँव में हुआ था। वे मराठा साम्राज्य की एक सम्माननीय शासक थीं, जिन्होंने अपनी वीरता, धार्मिकता और प्रशासनिक कुशलता से न केवल अपने राज्य को सशक्त किया, बल्कि समाज सुधार की दिशा में भी महत्वपूर्ण कार्य किए। उनके शासनकाल में राज्य की आर्थिक और साँस्कृतिक उन्नति हुई। उन्होंने भारत के विभिन्न तीर्थ स्थलों पर मंदिरों और धर्मशालाओं का निर्माण कराया। काशी विश्वनाथ मंदिर समेत देशभर के मंदिरों और घाटों के पुनर्निर्माण का कार्य भी उन्होंने किया।

अहिल्या बाई एक कुशल सैन्य नेता भी थीं, जिन्होंने कई युद्धों में भाग लिया और अपनी रणनीति और वीरता से मराठा साम्राज्य की रक्षा की। उनके शासनकाल में इंदौर राज्य एक समृद्ध और शक्तिशाली राज्य बना। उनके धार्मिक और सामाजिक कार्यो ने भारतीय समाज को एक नई दिशा दी।

रानी दुर्गावती ने भी कम आयु का राजकाज का संचालन किया साथ ही कई युद्ध किए और शत्रु को पराजित भी किया। रानी दुर्गावती (शा.क.य 1550 से 1564 तक) गढ़ा राज्य की शासक महारानी थीं। उनका विवाह गढ़ा राज्य के राजपूत राजा दलपत शाह से हुआ था, जिसे गोंड राजा संग्राम शाह ने गोद लिया था। उन्हें मुगल सम्राज्य के खिलाफ अपने राज्य की रक्षा के लिए याद किया जाता है।

मान वंदना यात्रा में दुर्गावाहिनी की बहनें सफेद सलवार–कुर्ती, केसरिया दुपट्टा और सिर पर साफा बांधकर शामिल हुई। यात्रा व्हाइट हाउस से शुरु हुई जो नगर के आयकर गोलंबर से वीरचंद पटेल पथ से आर ब्लाक से वापस अदालतगंज पार्क पर यात्रा का समापन किया गया। मान वंदना यात्रा का जगह–जगह सामाजिक, धार्मिक व राजनीति संगठनों ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया।

chitranjan1964@gmail.com

बंगलुरू, कर्नाटक के इंजीनियरिंग कॉलेज में युवकों के साथ 'संवाद सेतू' के कार्यक्रम में
युवाओं द्वारा राष्ट्र के उत्थान पर योगदान के संदर्भ में संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी परांडे

गाँधीनगर, माणसा नगर के लाकरोडा गांव में आर्य समाज द्वारा प्रेरित, 'दर्शन योग धाम' आश्रम में उत्तर गुजरात प्रांत, सामाजिक समरसता की बैठक में पूज्य संतों के साथ उपस्थित विहिप केन्द्रीय मंत्री व अ.भा. समरसता प्रमुख श्री देवजी भाई रावत

पटना (बिहार) में 'विहिप की मातृ ईकाई दुर्गावाहिनी–मातृशक्ति द्वारा विशाल मान वंदन यात्रा (पथ संचलन) का आयोजन' किया गया।

तिरुनेलवेली, तमिलनाडु के शारदा कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी परांडे तथा कार्यक्रम में उपस्थित कॉलेज के विद्यार्थी

हरिद्वार में सरकारी संपत्तियों पर अतिक्रमण कर बनाई गई मजारों को ध्वस्त करने के सरकारी अभियान के समर्थन में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा मुख्यमंत्री को संबोधित जिलाधिकारी महोदया को ज्ञापन दिया गया

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.03.2025
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

विकसित राजस्थान की ओर बढ़ते कदम

पेयजल

- ग्रामीण क्षेत्रों में 20 लाख घरों में पेयजल कनेक्शन
- शहरी क्षेत्र में पेयजल के हेतु अमृत 2.0 योजना में 5 हजार 123 करोड़ रुपये के कार्य
- मुख्यमंत्री जल जीवन मिशन (शहरी) में 5 हजार 830 करोड़ रुपये के कार्य
- 1000 ट्यूबवेल व 1500 हैंडपंप

राम जल सेतु लिंक परियोजना (संशोधित PKC-ERCP)

- 9 हजार 416 करोड़ रुपये के कार्यादेश जारी
- 12 हजार 64 करोड़ रुपये की निविदाएँ जारी
- 12 हजार 807 करोड़ रुपये की स्वीकृति जारी
- आगामी वर्ष में लगभग 9 हजार करोड़ रुपये के नवीन कार्यों की शुरुआत
- Rajasthan Water Grid Corporation में लगभग 4 हजार करोड़ रुपये के कार्य

ऊर्जा

- मुख्यमंत्री निःशुल्क बिजली योजना के लाभान्वितों के घरों पर निःशुल्क सोलर प्लांट्स लगाकर 150 यूनिट्स बिजली प्रतिमाह निःशुल्क
- 6 हजार 400 मेगावाट से अधिक अतिरिक्त ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य
- 5 हजार 700 मेगावाट ऊर्जा उत्पादन के नए कार्यों की शुरुआत

सड़क

- 6 हज़ार करोड़ रुपये की लागत से 21 हज़ार किमी. नॉन-पेचेबल सडकों में सुधार
- 5 हज़ार करोड़ रुपये से अधिक की लागत से बनेंगे हाईवे, बाईपास, ब्रिज एवं एलिवेटेड रोड़
- PMGSY के अंतर्गत 1600 बसावटों को जोड़ा जाएगा
- 5 हजार से अधिक आबादी वाले 250 ग्रामीण कस्बों में अटल प्रगति पथ
- सड़क सुरक्षा के लिए हाइवे पर जीरो एक्सीडेंट जोन व 50 ब्लैक स्पॉट का सुधार कार्य
- 15 शहरों में रिंग-रोड के निर्माण हेतु डीपीआर बनेगी
- हाईवे पर 20 ट्रौमा सेंटर्स के लिए 50 करोड़ रुपये का प्रावधान, साथ ही 25 Advanced Life Support Ambulances भी उपलब्ध होगी

लाखों युवाओं को सौगात

- आगामी वर्ष में 1.25 लाख सरकारी पदों पर भर्ती
- निजी क्षेत्र में एक लाख 50 हजार युवाओं को रोजगार
- 500 करोड़ रुपये का विवेकानन्द रोजगार सहायता कोष
- 'विश्वकर्मा युवा उद्यमी प्रोत्साहन योजना' में 2 करोड़ रुपये तक के ऋण पर 8 प्रतिशत ब्याज अनुदान

ग्रामीण विकास

- मनरेगा के अन्तर्गत 3 हजार 400 लाख मानव दिवसों का सृजन
- स्वामित्व योजना में 2 लाख परिवारों को नए पट्टे
- दादूदयाल घुमन्तू सशक्तिकरण योजना में 25 हजार परिवारों को पट्टे
- पंचगौरव योजना को गति देना, 550 करोड़ रुपये का प्रावधान
- एससी/एसटी कल्याण के लिए एससीएसपी एवं टीएसपी फण्ड की राशि बढ़ाकर 1750 करोड़ रुपये

वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना

- 6 हजार वरिष्ठजनों को हवाई मार्ग से तथा 50 हजार को ए.सी. ट्रेन से तीर्थ यात्रा

सामाजिक सुरक्षा

- विभिन्न वर्गों के पात्र को देय पेंशन बढ़ाकर एक हजार 250 रुपये प्रतिमाह
- विमुक्त, घुमंतू और अर्द्ध-घुमंतू समुदायों के लिए 'दादूदयाल घुमन्तू सशक्तिकरण योजना'
- बालिकाओं को शिक्षा में प्रोत्साहन के लिए 35 हजार स्कूटी वितरण का लक्ष्य
- खाद्य सुरक्षा हेतु 10 लाख नवीन Units NFSA लाभान्वित के रूप में जोड़ना
- 5 हजार उचित मूल्यों की दुकानों पर अन्नपूर्णा भण्डार

महिला

- 20 लाख महिलाओं को लखपति दीदी की श्रेणी में लाये जाने का लक्ष्य
- 3 लाख लखपति दीदियों को आगामी वर्ष में 1.5 प्रतिशत ब्याज दर पर 1 लाख रुपये तक का ऋण
- मुख्यमंत्री अमृत आहार योजना-आंगनबाड़ी पर सप्ताह में 5 दिवस दूध
- गर्भवती महिलाओं के लिए मुख्यमंत्री सुपोषण न्यूट्री किट योजना की शुरुआत

नगरीय विकास

- शहरी क्षेत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय शहरी विकास योजना के तहत लगभग 12 हजार 50 करोड़ रुपये के कार्य
- 500 Pink Toilets का निर्माण
- समस्त शहरों में 50 हजार स्ट्रीट लाइट्स
- सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र से अम्बाबाड़ी एवं विद्याधरनगर (टोडी मोड़ तक) जयपुर मेट्रो का कार्य
- शहरी क्षेत्रों में 500 नई बसें उपलब्ध
- 100 अत्याधुनिक Robotic-Three-One सीवरेज सफाई मशीनें

सुशासन

- प्रथम चरण में 3 हजार से अधिक जनसंख्या वाले पंचायत मुख्यालयों में अटल ज्ञान केन्द्र
- Ambedkar Institute of Constitutional Studies and Research की स्थापना
- 8 नए जिलों में विभिन्न विभागीय कार्यालयों की स्थापना के लिए एक हजार करोड़ रुपये

हरित बजट

- राज्य का प्रथम हरित बजट (Green Budget)
- Circular Economy के व्यापक प्रसार के लिए Rajasthan Circular Economy Incentive Scheme-2025
- मिशन हरियाळो राजस्थान के अन्तर्गत 10 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य
- लघु एवं सीमान्त कृषकों को बैलों से खेती पर प्रोत्साहन राशि के रूप में 30 हजार रुपये प्रतिवर्ष
- 250 करोड़ रुपये राशि की 'हरित अरावली विकास परियोजना'
- स्वयं सहायता समूह की 25 हजार महिलाओं को सोलर दीदी के रूप में प्रशिक्षण
- एक लाख लाभार्थियों को निःशुल्क Induction Cook Top-Cooking System वितरण का लक्ष्य

औद्योगिक विकास

- निवेश सुविधा के लिए 'सिंगल विंडो – वन स्टॉप शॉप'
- Service Sector में निवेश हेतु Global Capability Centre (GCC) Policy
- Trading Sector के विकास एवं संवर्द्धन हेतु Rajasthan Trade Promotion Policy
- DMIC (Delhi Mumbai Industrial Corridor) से लिंक कर 2 Logistics Parks

कृषि बजट

- आगामी वर्ष में 35 लाख से अधिक किसानों को 25 हजार करोड़ रुपये ब्याज मुक्त फसली ऋण वितरण का लक्ष्य
- किसान सम्मान निधि की राशि अब 9 हजार रुपये प्रतिवर्ष
- राजस्थान कृषि विकास योजना में 1 हजार 350 करोड़ रुपये
- गेहूँ के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर प्रति क्विंटल बोनस राशि बढ़ाकर 150 रुपये
- Micro Irrigation के लिए एक लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में प्रावधान
- आगामी वर्ष में 3 लाख 50 हजार हेक्टेयर में Drip एवं Sprinkler Irrigation System के लिए अनुदान
- 25 हजार Farm Ponds, 10 हजार डिग्गियों, 50 हजार सौर पम्प संयंत्रों तथा 20 हजार किलोमीटर सिंचाई पाइप लाइन के लिए 900 करोड़ रुपये का अनुदान
- आगामी वर्ष 1 लाख हैक्टेयर में ड्रोन के माध्यम से नैनो यूरिया एवं नैनो डीएपी का छिड़काव पर प्रति हैक्टेयर 2 हजार 500 का अनुदान

पशुपालन एवं डेयरी

- 'मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना' में श्रेणीवार बीमित पशुओं की संख्या दोगुनी
- एक हजार नवीन सहकारी समितियों/दुग्ध संग्रह केन्द्रों की स्थापना
- मिल्क उत्पाद, डेयरी प्लांट की प्रोसेसिंग एवं पशु आहार संयंत्रों के क्षमता वर्धन हेतु 540 करोड़ रुपये
- गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना में 2.50 लाख लाभार्थियों की बढ़ोतरी
- गोशालाओं तथा नंदीशालाओं हेतु प्रति पशु देय अनुदान को बढ़ाकर 50 रुपये प्रतिदिन

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

- समस्त जिला चिकित्सालयों में Diabetic Clinics
- गंभीर/असाध्य रोगों के उपचार के लिए Day Care Centres भी समस्त जिला चिकित्सालयों में प्रारम्भ
- प्रदेश को TB मुक्त बनाना, प्रत्येक CHC पर Digital X-ray Machine, TRU-NAAT (ट्रू-नॉट) व CB-NAAT (CB-नॉट) Machine की उपलब्धता
- 'Fit Rajasthan' अभियान, 50 करोड़ रुपये के प्रावधान
- नवीन आयुष नीति, गांवों को आयुष्मान आदर्श ग्राम घोषित कर 11 लाख रुपये प्रोत्साहन राशि
- निःशुल्क जाँच एवं दवा हेतु 3 हजार 500 करोड़ रुपये का 'MAA कोष' का गठन
- MAA नेत्र वाउचर योजना की शुरुआत
- 70 वर्ष आयु से अधिक के वृद्धजनों को आवश्यकतानुसार घर पर ही निःशुल्क दवा

कार्मिक कल्याण

- समस्त मानदेय कर्मियों के मानदेय में आगामी वर्ष 10 प्रतिशत की वृद्धि
- NFSA राशन वितरण का कार्य संभाल रहे Dealers के कमीशन में भी 10 प्रतिशत वृद्धि
- न्यायिक सेवा के पेंशनर्स/पारिवारिक पेंशनर्स को 70 वर्ष की आयु पूर्ण करने पर 5 प्रतिशत अतिरिक्त भत्ता
- पंचायती राज एवं नगरीय निकायों के जनप्रतिनिधियों के मानदेय में भी आगामी वर्ष 10 प्रतिशत की वृद्धि

R.O.No. : Samwad/D714/2024-2025

राजस्थान संवाद

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी